* श्रीहरि *

दयानन्दमतविद्रावण

अर्थात्

सत्यार्थप्रकाश पर शङ्काप्रवाह

ला० भवानीप्रसाद नम्बरदार
देवरीकलां जि० सागर रचित ।

तृतीयवार १००० } सन् १९१४ ई० { मू० ।)

Printed and Published by P. Brahmdeo Sharma at the Brahm Press, ETAWAH.

पुस्तक मिलनेका पता—
मैनेजर—ब्रह्मप्रेस इटावा ।

॥ भूमिका ॥

प्रिय पाठकगण! आपको विदित होगा कि लगभग छे वर्ष व्यतीत हुए मैंने अपने मित्र गण पं० गोविंदराव सा० आ० वें० म० (जो आज इस संसारमें नहीं हैं और जिनको कराल काल ने इस संसार से उठाकर हमको उत्साह हीन कर दिया है) व पं० लक्ष्मणराव सा० आ० वें० मा० व पं० परमानन्द सा० व बाबू नन्दकिशोर सा० व मुन्शी छोटेलाल व मुन्शी मौजी लाल सा० इत्यादि की सलाहसे इस दयानन्द मत विद्रावणकी प्रथम रचना की थी और फिर उक्त पुस्तक को श्रीयुत महामान्यवर "पण्डिताग्रगण्य श्रीमान् मिश्र पं० ज्वालाप्रसाद जी (जिनका नाम सुनते ही समाजी चक्कड़ा जाते हैं) ने शुद्ध करके तन्त्र प्रभाकर प्रेस मुरादाबाद में छपवा दिया था और जिस पुस्तकमें लिखी हुई शंकाओं का आज तक किसी समाजी महाशयने "समाधान नहीं किया। हां अलवत्ता एक महाशय पं० सत्यव्रत शर्मा जी इटावा निवासीने कुछ हिम्मत बांधकर व एक " भारतहितैषी नामक मासिक पुस्तक निकालकर इ सद०नं० म० वि० की शंकाओंका समाधान करना आरम्भ किया था और उस वक्त उक्त पण्डित जी की लेखनीकी तेजी देखकर मुझे आशा बंधी थी कि अब इन शंकाओंका समाधान होकर अवश्य मेरा मनोरथ पूर्ण हो जायगा और इसी कारण मैं वर्ष भर का मूल्य पेशगी देकर उस भा० हि० का ग्राहक भी हुआ था परन्तु वह आशामेरी एकदम मृग जलकी नाईं निराशा होगई कि उक्त पं० जी ने उस मासिकपत्र का निकालना ही बंद कर दिया जिससे ऐसा सन्देह हो सकता है कि शायद पंडित जी की लेखनी या बुद्धिने इन शंकाओंके यथार्थ समाधान करने की हिम्मत न बांधी हो या और जो हो ईश्वर जानै—खैर—और अब जब कि ऐसे विद्वान् पंडित जी ने जो स्वामी तुलसीराम जी के समीपी होने पर भी इन शंकाओंके समाधान करने से हाथ खींच लिया तब पहली वार की छपी हुई पुस्तकें खच

हो जाने पर भी दूसरी वार इसको छपवाने की मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता था परन्तु फिर अपने परम मित्र श्रीयुत लाला लक्ष्मी नारायण जी गर्ग वकील जौहरी बाजार आगरा का आग्रह देखकर कि नहीं इसको दूसरी वार छपाना ही चाहिये इस द० नं० म० वि० में कुछ थोड़ी शंकायें और मिलाकर पुस्तक को उक्त मित्रको समर्पण करता हूं कि जिस छापेखाने में वह उचित समझें इसको छपवा देवें—मुझे कोई उजर न होगा ॥

और अगरचे अब मुझे कोई आशा (जब कि पं० सत्य व्रत जी शर्मा जैसे विद्वान् भी मौन साधन कर बैठे हैं) नहीं है कि इन शंकाओंका कोई समाधान कर देवे तथापि सम्पूर्ण समाजी महाशयों से फिर भी सविनय निवेदन है कि अब भी यदि कृपा पूर्वक वह इन शंकाओंका समाधान करदेंगे तो मुझे हमेशा को अपना अहसानमंद बना लेंगे और इसी के साथ यह भी विनय है कि यदि मेरी इन शंकाओं में कोई अक्षर कम ज्यादा हो गये हों या कोई अनुचित शब्द आ-गये हों तो कृपाकर क्षमा करेंगे सिवाय इसके मैं अपने परम सहायक पंडित लक्ष्मीदत्त जी सनातनधर्मोपदेशक देवरी नि-वासीको जिन्होंने प्रथमवार इस द० नं० म० वि० की रचना में मुझे बड़ी भारी सहायता दी थी (और जिनका नाम मैं अपनी असावधानी से उस वक्त लिखने को भूल गया था) और वैसी ही इस वार भी सहायता दी है कोटिशः धन्य-वाद देता हूं कि उक्त पंडित जीकी ही कृपा व सहायतासेही मेरा यह मनोरथ इस पुस्तककी रचनाका पूर्ण व सफलहुआ ॥

आपका कृतज्ञ

भवानी प्रसाद नम्बरदार

आनरेरी मजिस्ट्रेट व वायस प्रेसीडेण्ट,

म्यूनीसिपिल कमेटी कस्बा देवरी

जिला सागर

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

दयानन्दमत विद्रावण ॥

शंका १—महाशय ! कहिये तो सही क्या ब्रह्मा से लेकर आज तक स्वामी जी के बराबर कोई भी वेद व उसके अर्थ का जानने वाला विद्वान् नहीं हुआ ? अगर हुआ है तो फिर उसने क्यों कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी जो आपके इस मत को सिद्ध करती यदि आप कहें कि नहीं हुआ तो फिर उन की बनाई हुई पुस्तकों के अर्थ का अनर्थ करके प्रमाण क्यों दिया जाता है ?

शङ्का २—स्वामी जी ने सम्पूर्ण वेद शास्त्र स्मृति के अर्थों का नाश करके प्रथम मङ्गलाचरण मेटा, ईश्वर का नाम लेना मेटा, ज्योतिष का फलित मेंटा, दण्डवत् प्रणाम मेंट कर नमस्ते चलाया, आचमन कफ की निवृत्ति को बतलाया, शूद्रों को वेद पढ़ने की आज्ञा दी, बहुत से धर्म ग्रन्थों को जाल-ग्रन्थ बताया, पुराण मेंटकर व्याह की रीति मेंटी, सो भी ऐसी नहीं, किन्तु कन्या को स्वयंवर के पसंद करने की आज्ञा दी, जन्मपत्र मेंटके जीवनचरित्र चलाया, व्याह के लिये लड़का लड़की की तस्वीर गली २ फिरवाई, जातिपांति का हिसाव न रखके लड़की जिसे पसन्द करे उस के साथ व्याह करने की आज्ञा दी, माता पिता और कुटुम्ब के सन्मुख वर का हाथ कन्या की छाती पर धरवाया, चारों वर्ण मिटाये सनातन मृतक पितरों का श्राद्ध मिटाके जीवित पितरों का श्राद्ध करवाया, और इस से दुनियां भर को क्या बरन भङ्गी बसोर तक को अपना पितर (बाप) बनाया, विधवा के ग्यारह २ पति करवाये, विधवा ही को क्यों, पति के जीते में भी तो दूसरा तीसरा आदि ग्यारह तक करनेकी आज्ञा दी, देवता मिटाकर मनुष्यों को ही देवता बनाया, ईश्वरके अवतार मिटाकर मूर्त्तिपूजन भी मिटाया, विशेष क्या ? ईश्वर

की सर्वशक्तिमत्ता को छीन कर उसको भी अल्पशक्ति कह दिया महाशय कहिये क्या यह सब सत्य है ? यदि नहीं है तो यहीं से झगड़ा समाप्त कीजिये, यदि सत्य है तो आगे चलकर हमारी शङ्काओं का यथार्थ समाधान कीजिये॥

शङ्का ३— क्यों जी आप के समाजियों में सिवाय मूर्त्ति पूजा छोड़नेके न किसी विधवा को पति कराते, न १० पुत्र उत्पन्न कराते, न कन्या की तस्वीर घर २ फिराते, न भंगी चमार को पितर बनाते, देखते हैं कहिये यह क्यों ? क्या इन की तामील करने में कुछ लाज आती है ? ॥

शङ्का ४—क्यों साहिब ! पण्डित जियालाल जी ने अपने दयानन्द छल कपट दर्पण में लिखा है कि स्वामी जी किसी कापड़ी के पुत्र थे और इनको बचपन में नाचने का अभ्यास था, तथा जो स्वामीजीके विज्ञापन छपे हैं वे क्या सब सत्य हैं?॥

शङ्का ५—स्वामी जी के १० नियमों में का एक यह भी नियम है (सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग) अब इससे मुझे यह पूछना है कि क्या इस नियम का पालन आप के यहां होता है और यदि होता है तो क्या इस को भी सत्य पालन कहेंगे कि जैसा पं० सत्यव्रत शर्मा द्विवेदी जी ने जनवरी सन् ०४ से एक भारतहितैषी नामक मासिकपत्रिका निकाल कर इस द० मं० म० वि०की सम्पूर्ण शंकाओंके समाधान करने की प्रतिज्ञा की थी और आज करीब ७। ८ बरस के हो चुके कि पत्र मजकूर के आठ नौ अंक से ज्यादा नहीं निकले अब कहिये इसको आप किस नियम में कहेंगे ॥

स्वामी जी ने स० प्र० भूमिका पृष्ठ ३ में लिखा है कि जब मैंने पहिला सत्यार्थ प्र० बनाया था उस समय मुझे संस्कृत भाषा का पठन पाठन करने व संस्कृत बोलने में (जन्मभूमि गुजरात होनेके कारण) विशेष ज्ञान न था, इस से भाषा अशुद्ध बन गई थी, अब इस भाषाका अभ्यास होगया है, इस से इस को शुद्ध करके फिर छपवाया है इस में कहीं २ शब्द व वाक्य भेद तो हुआ है, पर अर्थ भेद नहीं हुआ ॥

शङ्का १–महाशय इस से तो साफ ही मालूम होता है कि इस सत्यार्थप्रकाश के पहिले स्वामी जी को शुद्ध भाषा का ज्ञान नहीं था इसी से पहिला सत्यार्थप्रकाश अशुद्ध हो गया, तो अब इसके पहिले का वेदभाष्य व भूमिका इत्यादि भी अवश्य ही अशुद्ध होंगीं ?? यदि आप कहें कि उस में भी कदाचित् कहीं अशुद्धता या वाक्यभेद हुआ होगा तो शुद्ध करलिया जावेगा भला यह तो ठीक है परन्तु पहिले स०प्र० में आपने मृतकों का श्राद्ध मानलिया था, और अब उस का खण्डन करदिया कहिये इसको कौन सा भेद समझें? या यह कहें कि उस समय स्वामी जी को सनातनधर्म से इतनी शत्रुता न थी ? जितनी पीछे हुई और पुराना लिखा सत्यार्थप्रकाश जो मिश्र जी के पास है उस में वे आप के छापेवालों की गलती वताए हुए विषय क्यों हैं ? ॥

शङ्का २–स० प्र० पृ० १ में ईश्वरके १०० नाम लिखकर ब्रह्मा विष्णु इत्यादि ईश्वर के नाम बतलाये हैं, और फिर पृष्ठ १५ में उनको पूर्वज महाशय विद्वान् कहदिया, अब कहिये इस में सत्य क्या है ? अगर आप विद्वान् बतलाते हैं तो बहुत अच्छा, इनके मा बाप का नाम बतलाइये ? क्योंकि बगैर इसके आप का सृष्टिक्रम बदल जायगा या ईश्वर मानिये, तो साकार स्वीकार करना पड़ता है ॥

शंङ्का ३–स्वामी जी तो सिर्फ वेदके ही मानने वाले थे अब बतलाइये कि यह १०० नाम ईश्वरके किस वेदानुकूल ग्रंथ के आदि में लिखे गये हैं ? क्या वेद में कहीं इन नामों के लिखने की आज्ञा है? और जब ये नाम ईश्वर के हैं तो फिर इन के उच्चारण में दोष क्या है ? क्या ईश्वर को एक नाम प्यारा व दूसरे से दुश्मनी है ? और यदि है तो आपने क्यों लिखे ? ॥

शङ्का ४—–स० प्र० पृ० २६ में लिखा है कि अन्त में म-

ङ्गलाचरण करने से बीच का लेख अमङ्गल होगा, सो तो ठीक है पर यह तो बतलाइये कि स्वामीजी ने सत्यार्थप्रकाश के आदि में " ओं सच्चिदानन्देश्वराय नमः " और अथ सत्यार्थ प्र० और शन्नोमित्रआदि और अन्त में फिर शन्नोमि:० और वेदभाष्य के प्रत्येक अध्याय के आदि में विश्वानिदेव सवित:० और ये १०० नाम ईश्वर के किस आशय से लिखे हैं ? क्या यह मङ्गलाचरण नहीं है? और यदि नहीं है तो क्या है? ॥

शङ्का ५—स्वामी जी कहते हैं कि " हरि:ओं " कहना वेदविरुद्ध है, फिर यह तो बतलाइये कि वेद में कहीं अथ ओं भी तो नहीं है, फिर यदि आप वेदानुकूल ही चलते हैं तो यह क्यों लिखा ? और जब ओं आप लिखते हैं तो हरि: से आपकी क्या दुश्मनी है? वह भी तो ईश्वर का नाम है ॥

शिक्षाप्रकरण ।

शङ्का १—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २८ में ऋतुगमन विधि लिखी है, उसमें प्रथमके चार दिन परित्यागकर शेष १२ दिनमें एकादशी त्रयोदशी छोड़के गर्भाधान करने को लिखा है, अब बतलाइये कि आपका यह लेख ज्योतिष के फलित से सम्बन्ध रखता है या नहीं ? अगर नहीं रखता तो एकादशी त्रयोदशी क्यों छोड़ी ? और बाकी दिन क्यों लिये ? ॥

शङ्का २—स० प्र० पृष्ठ २९ में लिखा है कि स्त्री योनि सङ्कोचन व पुरुष वीर्य स्तम्भन करे, पर यह तो कहिये कि यह बेशरम शिक्षा उनको कौन देवे ? आप या उनके मा बाप ?

शङ्का ३—स० प्र० पृष्ठ ३० में उपस्थेन्द्रिय के स्पर्श और मर्दन से वीर्यकी क्षीणता व नपुंसकता कहकर हस्तमें दुर्गन्ध होना भी कहते हैं और इस के पहिले पृ० २९ में ऐसी शिक्षा माता के द्वारा देना लिखा है, भला यह तो बताओ कि माता ऐसी शिक्षा कर सकती है ? जरा आप ही तो अपनी मा के सन्मुख ऐसी शिक्षा देने को कहिये, फिर देखिये

क्या मजा आता है? यदि आप कहें कि स्त्रियां खुद पढ़ लेवेंगी तो अव्वल तो सब स्त्रियां पढ़ी नहीं हैं, जो स्वामीजी के लेख को पढ़ लेंगीं, दूसरे यदि कोई पढ़ी भी हुई तो जबतक उनको करके न दिखा दिया जाय तबतक वह स्वामी जी के लेखानुसार कभी न कर सकेंगी, तब आप सरीखे महाशयों को जरूर ही सिखलाना होगा, और फिर स्वामीजी वेदविरुद्ध कदम ही नहीं रखते, भला बतलाइये तो सही, कि यह शिक्षा किस वेद में लिखी है? और नपुंसकपने और हाथ में दुर्गन्ध होनेकी परीक्षा स्वामी जी को कैसे हुई? । सत्यार्थप्र० पृ० ३१ में स्वामी जी कहते हैं कि ज्योतिष का गणित सच्चा और फलित झूंठा है ॥

शङ्का ४–कहिये इस का प्रमाण क्या है? यदि यह बात सत्य है, तो फिर गर्भाधान के लिये कोई कोई तिथियां किस कारण से रोकी हैं? इसी तरह संस्कारविधि पृ४ ४७ में भी लिखा है, पुष्य नक्षत्र तथा उत्तरायणादि में विवाह करे तो जब फल झूठा ही है तो एक का लेना व एक का छोड़ना और फिर उत्तम नक्षत्र का लेना यह क्या बात है? सिवाय इसके अपने ही टीका किये हुए कारकीय पृष्ठ० २० पंक्ति १५ में तो देखिये फिर पृष्ठ ३१ पंक्ति २७ में लिखा है कि क्या यह ग्रह चैतन्य हैं? जो क्रोधित हो कर दुःख व शान्त हो कर सुख देवेंगे ॥

क्योंजी? स्वामी जीने तो पहिले सौ नामों की व्याख्या में इन नौ ग्रहोंके नाम भी ईश्वर के नाम बतलाये हैं, क्या वहां झूंठ लिखा है? और यदि सत्य है तो आपही कहिये कि ये ग्रह चैतन्य हैं या जड़? ॥

सत्या० प्र० पृ० ३३ में लिखा है कि अगर कोई कहे कि यन्त्र मन्त्र डोरा बांधने से रक्षा होती है तो उसको उत्तर देना चाहिये कि क्या वह परमेश्वर के नियम कर्मफल से भी बचा सकते हैं? ।

शङ्का ५–अब बतलाओ कि अगर यंत्र मंत्र डोरा से रक्षा नहीं

होती तो स्वामी जी ने पञ्चमहायज्ञ विधि के पृ० ५ में जो लिखा है कि गायत्री मन्त्रसे शिखा बांध के रक्षा करै यह क्यों? क्या मंत्र यन्त्र डोरे से रक्षा न होके चोटी बांधने से रक्षा हो सक्ती है? और अगर हो सक्ती है तो लीजिये आप चोटी बांधके रक्षा करें और हम किसीके हाथ में डंडा देते हैं देखें आपकी खोपड़ी फूटती है या नहीं?

स० प्र० पृ० ३३ में लिखा है कि ९ वर्षके आरम्भ में द्विज अपनी सन्ततिको उपनयन कराके शिक्षा व विद्या पाने को भेजे और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये बिना भेज देवें ॥

शङ्का ६–अब कहिये इस लेख से जाति भेद जन्मसे पाया जाता है या विद्या पढ़ने से? और जाति जन्म भेद से है तो फिर आगे वेद प्रकरण व वर्ण प्रकरण में विद्या से क्यों कहा गया? और इन तीनोंमें कौन सत्य है व कौन असत्य हैं?

सत्यार्थ प्र० के पृ० ४१ में लिखा है कि सन्ध्या दो ही काल उचित है ॥

शङ्का ७–भला यह तो बतलाओ कि तीन कालके करने में आपका क्या नुकसान है? और करने वालेको क्या अजीर्ण होता है? क्या ईश्वरका भजन दो वक्तसे ज्यादा नहीं होना चाहिये? सिवाय इसके हवन तो आप वायुकी शुद्धिको बतलाते हैं अगर इन दो समयों के विपरीत वायु बिगड़ी तो फिर आप उसकी शुद्धि को हवन करेंगे या नहीं? और यदि करेंगे तो यह नियम भङ्ग होगा या नहीं? और यदि नहीं करते तो फिर वायु की शुद्धि कैसे होगी और ऐसे नियम से क्या फायदा? फिर महाभारत बनपर्व में युधिष्ठिर के पास आकर दुर्वासा का दोपहर की सन्ध्या करना स्पष्ट ही है ॥

शङ्का ८–यह बात सम्पूर्ण संसारको विदित है कि ब्रह्मा जी के निर्माण किये वेद के २ भाग अर्थात् मंत्र वा ब्राह्मण हैं और समाजी इन दोनों में से केवल मन्त्र भाग ही को

मानते हैं ब्राह्मण को वेद नहीं मानते अब मैं पूछता हूं कि क्या कोई समाजी सखी का लाल अपने माने हुए वेद से यज्ञोपवीतादि संस्कार या पञ्चमहायज्ञादि सिद्ध कर सक्ते हैं यदि कर सकें तो कर दिखावें नहीं तो यज्ञोपवीतादि संस्कार भी वेदविरुद्ध होने से क्यों नहीं छोड़े जाते॥

शंका ९-आपके स० प्र० मुद्रित सन् ७५ में लिखा है कि दो काल मांससे हवन करना चाहिये अब बतलाइये कि इस में हिंसा होगी या नहीं और फिर यहां आप दया का क्या अर्थ कर लेंगे व दया को किस रसातल को भेजेंगे॥

शङ्का १०-भला क्यों साहब! स्वामी जी ने संस्कारविधि में खिचड़ी का हवन करना भी लिखा है अब कहिये कि यह बात आप कहीं वेद से सिद्ध कर सकते हैं और फिर इस खिचड़ी में नमक इत्यादि भी पड़ना चाहिये या नहीं? वाह क्या खूब त्रिकाल संध्या में तो दोष लगाया जावै व मांस खिचड़ी का हवन बतलाया जावे इस से बढ़कर और उत्तम उपदेश क्या होगा—

स० प्र० पृ० ३१ में लिखा है कि अगर कोई बुद्धिमान् पांच जूता या दण्डा मारे तो महावीर देवी भाग जाती है॥

शङ्का १—क्यों जी सभ्यता और सज्जनता क्या इन्हीं दुर्वाक्यों का नाम है? और इन्हीं वाक्यों पर आप स्वामी जी को बुद्धिमान् कहते हैं अगर वे बुद्धिमान् थे तो इतना क्रोध क्यों?

शूद्रवेदाधिकार प्रकरण।

पृष्ठ ४३ में लिखा है कि जो कुलीन शुभ लक्षण युक्त शूद्र हो तो उस को मंत्रसंहिता छोड़ कर सब शास्त्र पढ़ावे और पृष्ठ ३४ में लिख आये हैं कि शूद्रादि वर्णों को उपनयन विना विद्याभ्यास के लिये गुरुकुल में भेज देवें फिर पृष्ठ ७५ पंक्ति २ में लिखा है कि जहां कहीं निषेध है, उस का अभिप्राय

यह है कि जिस को पढ़ने पढ़ाने से कुछ न आवे वह निर्बुद्धि होने से शूद्र कहाता है, उस का पढ़ना पढ़ाना व्यर्थ है.

शङ्का १—अब इस में शंका है कि अव्वल कुलीन शूद्र लिखा जिस को मंत्र संहिता छोड़ के शास्त्र पढ़ाने की आज्ञा दी फिर लिखा कि जिस को पढ़ने पढ़ाने से कुछ न आवे वह मूर्ख शूद्र कहाता है और अब कहिये इस में सच क्या है? शूद्र कुल व वर्ण से है या न पढ़ने से? अगर वर्ण से है तो यह दूसरी बात काट देना चाहिये यदि न पढ़ने से है तो पहिली को काटो, सिवाय इस के हम यह भी पूछते हैं कि वेद पढ़ने की आज्ञा किस को दी है? वह तो न पढ़ने ही से शूद्र हुआ है अगर पढ़ सका तो शूद्र कैसे होता है? फिर पहिले कहा कि शूद्र को मंत्र शास्त्र छोड़ सर्वशास्त्र पढ़ावें और फिर पृष्ट ७४ पंक्ति २ में कहते हैं कि सब स्त्री पुरुषों को वेदादि पढ़ने का अधिकार है, क्यों साहब यह क्या? आप ही निषेध करें और आप ही आज्ञा दें और फिर यह भी तो बतलाओ कि यह शूद्र का निर्णय तो २५ वें वर्ष परीक्षा के पश्चात् होगा यदि इसके पहिले कोई पूछे तो वह अपनी जाति क्या बतलावेगा? स० प्र० पृ० ५४ पंक्ति १४ में लिखा है कि जो २ सृष्टिक्रम से विरुद्ध है वह सब असत्य है, जैसे बिना माता पिता के पुत्र का होना तथा १२ पंक्ति में जो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव और वेद के अनुकूल हो वह सत्य, और उसके विरुद्ध है वह असत्य है ॥

शङ्का २—अब हम पूछते हैं कि ईश्वरसे ब्रह्मा उत्पन्न हुए या नहीं? और यदि ईश्वरसे नहीं हुए तो किससे हुए? और अगर हुए तो बिना स्त्री पुरुषके योगके आप उत्पत्ति मानते ही नहीं तो बतलाओ परमेश्वरकी वह स्त्री जिससे ब्रह्माजी उत्पन्न हुए कौन हैं? स० प्र० पृष्ठ ५७ पंक्ति १—कोई कहे कि किसीने पहाड़ उठाया—मृतक जिलाया, समुद्रमें पत्थर तैराये

परमेश्वरका अवतार हुआ ये सब बातें सृष्टिक्रमके विरुद्ध होने से असम्भव हैं क्यों जी आप महाभारत व वाल्मीकीय रामायणको तो मानते ही हैं. जरा ! आंख खोलकर देखिये कि अश्वमेध पर्वके ६९ अध्यायमें परीक्षित मृतक पैदा हुये थे श्री कृष्णने उनको जीवित किया था नहीं ? वाल्मीकीयमें लिखा है कि रामचन्द्रके राज्यमें एक शम्बुक नाम शूद्र तप करता था इस पापसे एक ब्राह्मणका पुत्र मर गया रामचन्द्रने उस शूद्रको मारकर पुत्रको जीवित किया श्रीकृष्णने गोवर्द्धन उठाया, महावीरजी ने लक्ष्मणजीके वास्ते सञ्जीवनी बूटी वाला पहाड़ उठाकर ला दिया समुद्र पर नल नीलने पुल बांधा, कहिये ये बातें सम्भव हैं या असम्भव ? या कह दीजिये कि यह रामायण या महाभारतमें किसीने मिला दिया है तब क्या वानरोंकी सेना सत्यार्थप्रकाशके पत्रे डालकर पार हुई थी ? स० प्र० पृष्ठ ६८ से ७१ तक स्वामीजीने अष्टाध्यायी महाभाष्य पिङ्गलाचार्यकृत छन्दोग्रन्थ महाभारत वाल्मीकीय रामायण चारों वेद इत्यादि पढ़नेको बतलाये हैं और लिखा है कि यह सब ऋषि मुनियोंके कहे हुए हैं और ऋषिप्रणीत ग्रन्थोंको इस लिये पढ़ना चाहिये कि वे बड़े विद्वान् व शास्त्र वेत्ता और धर्मात्मा थे और फिर लिखा है,कि इनमें से जो२ वेद विरुद्ध हो उसको छोड़ देना चाहिये ॥

शङ्का ३–अब हमारी यह शङ्का है कि प्रथम क्या स्वामी जी को इतनी बुद्धि नहीं थी जो इनमें से वेद विरुद्ध ग्रन्थों को आप ही निकाल देते फिर इस लिखने की आवश्यकता क्या थी ? ब्रह्मादिकके ग्रन्थ भी वेद विरुद्ध हैं यह बुद्धि आप को किस ग्रन्थके देखने से आई वा इसका प्रमाण क्या है । यदि स्वतः प्रमाण बोलते हो तो आप ऋषियोंके निन्दक हो दूसरे जब ऋषिप्रणीत ग्रन्थोंमें भी आप कहते हैं कि जो बात वेद विरुद्ध होगी वह नहीं मानी जायगी तो अब कहिये कि

ऋषियोंकी पूर्ण विद्वत्ता कहां रही? और वे कैसे धर्मात्मा हो सक्ते हैं?

और कहिये इस लेख के द्वारा स्वामी जीने ऋषियोंकी निन्दा की या नहीं? और अब स्वामी जी को निन्दक कहना क्या अयोग्य होगा? और अब क्या स्वामी जी मनु जी के लेखानुसार जाति पांति और देश से निकाल देने के योग्य न हुए? मनु जी का लेख देखना हो तो दयानन्दतिमिर भास्कर पृष्ठ ४५ में देखो सिवाय इस के यह भी शङ्का है कि जब आप को वेदानुकूल ही प्रमाण है तो और ग्रन्थों में क्यों भटकते हो? और यह भी बतलाओ कि स० प्र० की रचना किस वेदानुकूल है और नित्य सन्ध्या करो, स्वर्ग की इच्छा हो तो भजन करो ये विधिवाक्य यज्ञोपवीत मंत्रोंके ऋषि देवता और उन के प्रयोग पंचयज्ञादि और यह पठन पाठन शिक्षा कौन से मन्त्र भाग के अनुकूल है और संन्यासी होकर चोगा बूट पहिनना और हुक्का पीना, कुर्सी मेज इस्तैमाल में लाना किस मंत्र भाग में है? और अब स्वामी जी के लेखको क्या कहना चाहिये? यह भी तो बतलाइये कि वेदानुकूलका आपके पास कोई प्रमाण भी है? या जिस से मतलब सिद्ध हो वह अनुकूल और जिस से मतलब न निकले उसे प्रतिकूल कहोगे॥

स० प्र० पृ० ७१ में स्वामी जी ने जाल ग्रन्थों में तर्क संग्रह को भी जाल ग्रन्थ बताया है।

शङ्का ४—क्यों जी बतलाओ तो कि फिर सत्यार्थप्रकाश पृ० ५४ से ६६ तक क्यों तर्क ही से भर दिया है? स्वामी जी ने भाषा ग्रन्थोंको कपोलकल्पित और मिथ्या बतलाया है अब कहिये कि आप की यह स० प्र० भी तो भाषा है वह क्यों न कपोल कल्पित समझी जावे? और क्या जिन गुसांई जी के २७० वर्ष पहिले का भविष्य लेख कि कलियुग में १० वा १५

वर्ष की उमर होगी वार २ अकाल होगा पानी कम वरसेगा अन्न कम पैदा होगा वर्णसंकर ज्यादा होंगे-शूद्र ब्राह्मणों को उपदेश करेंगे पाखण्ड और विवाद से सद्ग्रन्थ लुप्त होंगे पतिव्रता भूषण हीन होंगी विधवाओं के नये २ शृङ्गार होंगे इत्यादि २ आज आंखसे देख रहे हैं जिन महाशयने साकार वा निराकार में साकार के उपासक होके भी कोई भेद नहीं माना जिन महाशय ने दुष्टों तक की वंदना करके अपनी सभ्यता वतलाई है जिन महाशय के लेख की एक २ चौपाई पढ़कर मन प्रसन्न हो जाता है जिस महात्मा ने यथार्थ पतिव्रतधर्म इत्यादि वतलाकर संसार का धर्म रक्खा, क्या उस को अप्रमाण मान के आप के इस भाषा स० प्र० को जिस के पढ़ने से मन को एक प्रकार की ग्लानि उत्पन्न होती है, और जिसमें आदिसे अन्त तक मिथ्या व वनावट ही वनावट है और जिस में संसार को नास्तिक बनाने के सिवाय और कोई लेख भी नहीं है प्रमाण मानें? इतने पर अगर आप कहें कि भाषा की पुस्तक में वनावट है तो हम पूंछते हैं कि कहां २ वनावट है वह वतलाइये? और उस को सिद्ध कीजिये और हम आप के स० प्र० की वनावट वतलाते हैं, यह देख कर मिलान कर लीजिये देखिये स० प्र० पृ० ११८ में एक मंत्र लिखकर स्त्री को ११ पुरुष तक नियोग कराने की आज्ञा दी है यह बनावट है, पृष्ठ २८७ में शंकराचार्य को जैनियों ने विषयुक्त वस्तु खिलाई यह वनावट है, पृष्ठ ३१९ में सोमनाथके ऊपर नीचे चुम्बक पत्थर लगा रक्खे हैं ये वनावट है पृष्ठ ३३३ में भागवतके नाम से हिरण्याक्ष और प्रह्लाद की कथा में वनावट है पृष्ट ३३५ में वोपदेव को जयदेव का भाई कहना वनावट है भक्तमाल के नाम से किसी चिड़ियाके वीटकी कथा लिखना वनावट है, इत्यादि सर्वथा ही आप की पुस्तक वनावट है, अव कहिये रामायण जैसी सत्य

पुस्तकके सामने क्या यह सत्यार्थ प्र० प्रामाणिक हो सकता है? कभी नहीं, सिवाय इस के शारङ्गधर को भी जाल ग्रन्थ बताया फिर हम पूछते हैं कि क्यों जी आप दवा क्यों खाते हैं? जन्मपत्र मुहूर्त इत्यादि आप व्यर्थ बतलाते हैं फिर कहिये संस्कारविधि में यज्ञोपवीत व विवाह में पुण्यनक्षत्र शुक्लपक्ष, उत्तरायण सूर्य. विधि, ये मुहूर्त क्यों लिखे?

स० प्र० पृ० ७३ पंक्ति १९ में लिखा है कि ऊर्ध्वपुण्ड्र त्रिपुण्ड तिलक कंठी माला धारण करना एकादशी व्रत आदि करना, नारायण, शिव, गणेश, भगवती, आदिके स्मरण करने से पापनाशक विश्वास करना यह सब विद्या पढ़ने पढ़ाने के विघ्न हैं॥

शङ्का ५—बतलाइये कि ऊर्ध्वपुण्ड्र त्रिपुण्ड्र तिलक आदि सिर्फ विद्या ही में विघ्नकारक हैं या कि आम तौर पर? और यदि आमतौरपर हैं तो फिर आपके समाजी मासिक व वार्षिक उत्सवोंमें क्यों लगाते हैं वह अगर ऊर्ध्वपुण्ड्र त्रिपुण्ड्र ही में है तो क्या है? कण्ठी माला गलेमें पहिनते हैं त्रिपुण्ड्र मस्तक पर लगाते हैं विद्या मुंहसे पढ़ते हैं कहिये जब कि इन तीन कामोंके वास्ते ३ जगह हैं तो एकके करनेसे दूसरेमें विघ्न क्यों? और क्या तुम्हारे निराकारकी उपासना भी विघ्न करेगी या नहीं?

शङ्का ६—एकादशी आदि व्रत नारायण आदि नामसे व विद्यासे सम्बन्ध क्या? अगर कहो कि समय जाता है वह भी बन्द होना चाहिये, दूसरे क्या आपकी प्रातः संन्ध्या में समय नहीं जाता अगर आप कहें कि वह वक्त फुरसतका है तो कहिये क्या हमारे वास्ते वह वक्त कहीं मना है, और यदि उस वक्त हम कण्ठी पहिन लेवें, और तिलक लगा लेवें तो फिर तो विद्या पढ़नेमें कुछ विघ्न नहीं है? सिवाय इस के नारायण ईश्वर नामसे पाप नाश होने का विश्वास न करें तो बतलाइये कि क्या आपके सत्यार्थप्रकाश या स्वामी जी

की तस्वीरसे करें? अगर आप कहें कि नारायण इत्यादि ई-श्वरके नाम नहीं हैं तो फिर स० प्र० के आदिमें क्यों लिखे गये?

स० प्र० पृ० ७२ में लिखा है कि हमारा मत वेद है जो वेदमें करने छोड़नेकी शिक्षा है उसीको हम करना छोड़ना मानते हैं।

शङ्का ७–क्योंजी जब वेद ही पर आपका विश्वास है तो फिर स० प्र० में चरक सुश्रुत उपनिषद् आदिका प्रमाण क्यों और क्या वेदमें कहीं यह भी लिखा है कि मूर्त्ति-पूजन मत करो अगर लिखा है तो बतलाओ? और जो नहीं लिखा तो वेदविरुद्ध इसका खण्डन क्यों? आपने वेद वत् लिखकर इतना और लिख दिया होता कि हमारा र-चित टीका ही हमारा वेद है।

विवाह प्रकरण।

स० प्र० पृ० ७८ पंक्ति १८ जो कन्या माताके छः पीढ़ियों की न हो और पिताके गोत्रकी न हो उससे विवाह करना योग्य है यह निश्चित बात है कि जैसी परोक्ष पदार्थमें प्रीति होती है वैसी प्रत्यक्ष में नहीं।

शङ्का १–यह परोक्ष और प्रत्यक्षका अर्थ आपने अपने गोत्र व माताके कुलमें निकट सम्बन्धका रक्खा है या और कुछ? पहिले इसको साफ कीजिये कि निज गोत्र या मातृ कुलमें शादी न होनी चाहिये या फासले में? या नजदीक न होना चाहिये॥

शङ्का २–आपने पृ० ८३ वा पृ० ९२ में शादी, लड़का ल-ड़की की पसन्दगी पर फोटो या जीवन चरित्र इत्यादिके द्वारा रक्खी है अब अगर लड़का लड़की की पसन्दगी निज गोत्र या मातृकुल में हुई तो उस समय क्या होगा? और वह शादी किसके विरुद्ध करना चाहिये? स० प्र० के? या

लड़का लड़की के ? और ऐसी हालतमें अब यह भी तो कहिये कि शादी मा वापकी रजामन्दीसे अच्छी या लड़का लड़कीकी पसन्दगीसे ? या उस्ताद उस्तादिनीकी पसन्दगीपर हो?

शङ्का ३–स्वामी जीने लिखा है कि बाल्यावस्था में निकट रहने से परस्पर क्रीड़ा लड़ाई प्रेम करते वा एक दूसरेके गुण दोष स्वभावका बाल्यावस्थाके विपरीत आचरण जानते और नंगे भी देखते हैं इससे उनका प्रेम नहीं रहता अब बतलाइये कि गुण दोष प्रथमसे मालूम हो जाना अच्छी बात है या बुरी ? और गुण दोष मालूम होने पर मित्रता होगी या शत्रुता ? क्योंकि जब गुण देख लेवेंगे तभी तो पसन्द करेंगे तिस पर आपने भी तो जीवन चरित्र बतलाके गुण दोष देखने का ही तात्पर्य रक्खा है या और कुछ ? अब बतलाइये कि गुण दोषकी पहिचान नजदीक से ज्यादा होती है या जीवन चरित्रसे ?

शङ्का ४–जब आप परोक्षमें प्रीति और प्रत्यक्षमें शत्रुता बतलाते हैं तो कहिये व्याहके पश्चात् स्त्री पुरुषको परोक्ष रखना चाहिये या प्रत्यक्ष ?

शङ्का ५-स्वामीजी ने लिखा है कि जो एकदेश में रोगी हो वह दूसरे देशमें खान, पान, वायु, बदलनेसे आरोग्यहोता है ऐसे ही दूर देशस्थमें व्याह होना उत्तम है अब कहियेतो गांव के गांवमें आपने सैकड़ा पीछे कितनी शादी देखी हैं ? यह तो वैसे भी बहुत कम होती हैं और दूर देशस्थसे कितने दूरकी मुराद है सिवाय इसके बहुत जगहकी वायु तो अक्सर खराब ही होती है फिर वहांके लड़के लड़कियोंकी शादी क्या होनीही न चाहियें ? और शायद ऐसे ही मुकाम पर अगर लड़का लड़की को पसन्दगी हुई तो फिर क्या होगा ? और फिर कहो कि यह स्वामीजीका नियम मा बापके स्वाधीन शादी होने में रहता है ? या लड़का लड़कीके ?

शङ्का ६–मुसलमानों की शादी तो बिलकुल स्वामी जी के लेख के विरुद्ध होती है फिर वहां ये ही सब दोष जो स्वामी जी ने लिखे हैं क्यों नहीं होते और इसको देख कर अब स्वामीजी के लेखों को कैसा समझना चाहिये ?

शङ्का ७–यह भी तो कहिये कि अगर किसी खराब वायु की जगह ही में किसीकी शादी हुई तो क्या आपकी हवनविधि वहांकी वायुको शुद्ध न कर सकेगी ? फिर इतने झगड़े में पड़ने से क्या फायदा है ? सीधा हवन द्वारा ही वायु शुद्ध करना बतला दिया जाता ॥

शङ्का ८–यह भी तो बतलाइये कि आर्यों ने तो सात पीढी तक रोका है आपने उसमें से एक क्यों छोड़ दी ? और जब आपका अभिप्राय दूर देशमें शादी होने से है तो इस छः पीढ़ी तक रोकनेकी भी जरूरत क्या है ?

स० प्र० पृ० ८९ से ९४ तक स्वामीजीने विवाह सम्बन्धी लेख लिखा है कि १६ वर्षसे २४ वर्ष तक की कन्या व २५ वर्षसे ४८ वर्ष तक पुरुषकी उमर होना चाहिये और ब्याह लड़का लड़की के आधीन होना चाहिये जब तक ऋषि मुनि, राजा आर्य, लोग, स्वयम्बर ब्याह करते थे तब तक देशकी उन्नति थी जबसे माता पिताके आधीन हुआ तबही से हानि हुई है ॥

शङ्का १–पहिले यह बतलाइये कि स्त्रीको पतिकी चाह कबसे होती है ? और संतान उत्पन्न होने का समय कबसे है ? अगर आप इन दोनों बातोंके उत्तरमें यह कहें कि जब से स्त्री रजस्वला होती है तबही से तो बतलाओ कि रजस्वला का समय कबसे होता है ? और फिर उसके पहिले या नजदीक २ क्यों ब्याह न करना चाहिये ॥

शङ्का २–स्त्री ससुराल में स्वतन्त्र रहती है या मायके में और उसके बदचलन होनेकी शङ्का स्वतन्त्रतामें है या कि परतंत्रतामें ? अगर आप कहें कि परतंत्रता में है तो बतलाओ

कि जहां उसको हर तरह की परदा व शर्म आदि हैं वहां कैसे बदचलन हो सक्ती है? और अगर आप कहें कि स्वतंत्रता में है तो फिर बतलाइये कि रजस्वला होने के पहले ही वह परतंत्रता में क्यों न कर दी जावे?

शङ्का ३-स्वामी जी कहते हैं कि २४ वर्ष की कन्या व ४८ वर्षके पुरुष का विवाह उत्तम है अब बतलाइये कि आज कल आदमीकी उमर आखीर से आखीर तक आप क्या देखते हैं? सिवाय इसके ४८ वर्षके पुरुषकी हालत व ताकत कैसी रहती है और फिर ऐसी शादीसे क्या लाभ है, अगर आप कहें कि ब्रह्मचर्य रहनेसेताकतमें कोई फर्क नहीं आता तो ठीक है पर यह तो कहिये कि जब २५ और ४८ वर्षकी उमर के बीच में स्त्री और पुरुषमें कामाग्नि उत्पन्न होगी उस वक्त उनकी निगरानी कौन करेगा? आप या आपके समाजी। अगर आप कहें ब्रह्मचर्य रहनेसे आयुष्य भी बढ़ती है तो फिर बतलाइये कि स्वामीजी तो ब्रह्मचारी थे फिर वे क्यों ५६, ५७ वर्षकी उमर में ही मरगये क्या उनका ब्रह्मचर्य दिखलाने ही को था और आज अगर स्वामीजीकी शादी हो गई होती तो बतलाइये कि आज उनकी स्त्री क्या करती और उसकी कामाग्नि बुझानेको कौन होता? इसीसे शायद स्वामीजीने नियोग चलाया होगा कि अगर कहीं हमारे शिष्योंको भी ऐसा इत्तफाक हो जावे तो उनकी स्त्रियां विचारीं तो तकलीफ न उठावें॥

शङ्का४-कन्यादान शब्दका आप क्या अर्थ समझते हैं? और दान देना दाताकी मर्जी पर है। या धनकी मर्जी पर, कि चाहे जहां चला जावे। हां पात्रापात्रका विचार जरूर है सो क्या अब नहीं होता?॥

शङ्का ५-यह साफ बात है कि स्त्री हमेशा रूपवान पुरुष और पुरुष रूपवती स्त्रीको चाहता है कहिये अब अगर कोई कन्या किसी रूपवान् पुरुष भंगी व बसोरको पसन्द क-

रखे तो क्या आप उसके साथ शादी कर देवेंगे ? अगर आप कहें कि नहीं, तो फिर यह नियम कहां रहा, और अगर आप कहें कि रूपकी कोई जरूरत नहीं है, तो बतलाइये कि फिर वह फोटो उतारनेसे और क्या देखा जाता है ? ॥

शङ्का ६—आप के स्वामीजी ने लिखा है कि जब लड़का लड़कीके फोटो मिल जावें तब उनके जन्म दिनसे जीवनचरित्र अध्यापकों को देखना चाहिये, भला यह तो बतलाइये कि इसमें कोई श्रुतिका प्रमाण भी है, और यह जीवनचरित्र कौन लिखेगा ? अगर आप कहें कि उनके मा बाप तो क्या मा बाप अपने लड़का लड़कीके दोष कभी लिख सकते हैं । कभी नहीं, क्योंकि उनको भी तो आपके नियमोंका ख्याल रहेगा कि स्वामी जीके नियमानुसार हमारे लड़का लड़कीका जीवनचरित्र देखे विना शादी नहीं होगी, और अगर आप कहें कि अध्यापक लिखें तो पहिले तो जन्मदिनसे लड़का लड़की अध्यापकके पास जाते ही नहीं हैं तो फिर वह लिखेगा क्या तिस पर अगर लिखा भी तो क्या ? जो दोष आप के समाजी हमारे ब्राह्मणोंके जिम्मे लगाते हैं. वैसा अध्यापक नहीं कर सकता, सिवाय इस के यह भी तो बतलाइये कि, अगर लड़का लड़कीका जीवनचरित्र खराब हुआ और उस को देख कर किसीने शादी न की तो फिर क्या वे कुंआरे ही बने रहेंगे ? विधवा के वास्ते स्वामी जीने नियोग बतलाया और ग्यारह खसम करनेकी आज्ञा दी पर इन विचारोंके वास्ते कुछ भी न लिखा इसमें भी तो कुछ इजाफा करते ? ॥

शङ्का ७ जाहिरा चाल चलन तो आपने जीवनचरित्रसे मालूम करनेको लिखा पर इससे अन्दरूनी बीमारीकी पहिचान कैसे होगी ? क्योंकि शायद लड़का देखनेमें अच्छा हुआ और दर असल नपुंसक हुआ तो इसकी पहिचान कैसे होगी,

ऐसी हालतमें तो डाक्टरी मुलाहिजे के वास्ते और लिखना बहुत जरूर था, और इस डाक्टरी परीक्षासे लड़कीका भी भेद खुल जायगा, कि लड़की बांझ तो नहीं है और अगर हुई तो शादीसे क्या फायदा ? और अगर डाक्टरी परीक्षामें कोई हरज समझा जाता है तो फिर यह अच्छा होगा, कि शादीसे दो तीन महीना पेश्तर लड़का लड़की एक जगह करदिये जावें कि दोनों अपनी खुद परीक्षा करलेंगे, और जीवनचरित्र देखनेकीभी जरूरत न होगी तथा आकर्षिकी विद्याभी जानलेंगे ॥

शङ्का ८—स्वामी जी कहते हैं कि जबतक व्याह स्वयम्वर से होता था तवतक देशकी उन्नति थी, सो तो सही, पर यह तो कहिये कि स्वयम्वर सिर्फ राजाओं व ऋषियों ही में होता था, या आमतौर पर ? और फिर यह भी बतलाइये कि जानकी जी का स्वयम्वर (व्याह) किस उमरमें हुआ था और अभिमन्युकी शादी किस उमरमें हुई—क्या ये स्वामी जी से मूर्ख थे ? और कहिये तो सही, कि अगर स्वामी जीके नियमानुसार अभिमन्युकी शादी बन्द रहती तो पाण्डवोंकावंश डूब चुका था या नहीं और ब्राह्मादि व्याह क्या अशुद्ध है कि जिनका नाम प्रथम उच्चारण होता है ॥

शङ्का ९—स्वामी जी कहते हैं कि जबसे व्याह मा बाप के आधीन हुआ है तभीसे देशकी हानि हुई है, अब कहिये कि स्वामी जीके मा बापका व्याह उनके मा बापकी आधीनतासे हुआ था, या स्वयम्वरसे । अगर माता पिताकी आधीनतासे हुआ है तो कहिये कि स्वामी जीके पैदा होनेसे देशकी क्या हानि हुई है, बल्कि आपकी समझमें तो देशकी उन्नतिही उन्नति है, भला स्वामीजीको जाने दीजिये, क्योंकि वह मर गये आप ही बतलाइये कि आपके बाप दादोंका व्याह कैसे हुआ है ? और फिर आपमें आपकी समझसे देशकी हानि के क्या लक्षण हैं ? क्या आप मूर्ख हैं ? कुपूत हैं ? कमजोर हैं ?

फिर हानि क्या ? हां अलवत्ता हम से पूछिये तो हम जरूर ही कहेंगे कि स्वामी जी का लेख आपकी समाज वालों के वास्ते बहुत ही सही है, कि जिन्होंने गन्धर्वसेन का किस्सा करके (यह किस्सा पीछे लिखा है) कुछ सोचा न विचारा देश के नाश करने पर कमर बांध ली ॥

शङ्का १०–स्वामी जी ने लिखा है कि ब्याह के पूर्व एकान्त में स्त्री पुरुष का मेल न होना चाहिये क्यों साहिब इस लेख की क्या जरूरत थी क्योंकि ब्याह के पेश्तर मेल हो जाने से हमारे कहे बमूजिब डाक्टरी परीक्षा की जरूरत न रहती और लड़का लड़की खुद परीक्षा कर लेते ।

शङ्का ११–स्वामी जी का लेख है कि जब वीर्य गर्भाशय में गिरने का समय हो तब स्त्री पुरुष दोनों स्थिर नासिका के सन्मुख नासिका नेत्र के सन्मुख नेत्र, अर्थात् सीधा शरीर और अत्यन्त प्रसन्न चित्त रहें डिगें नहीं. पुरुष अपने शरीर को ढीला छोड़े और स्त्री वीर्य प्राप्ति के समय अपान वायु को ऊपर खींचे योनि को ऊपर संकोचन कर वीर्य को ऊपर आकर्षित करके गर्भाशय में स्थित करे पर यह नहीं लिखा कि यह बात कौन सिखावे क्योंकि किताबी तालीम से तो ये बातें समझ में नहीं आ सकतीं इस से इस जगह लड़का लड़की के मा बाप को ही सिखलाने की आज्ञा दी जाती तो ठीक था कि वह एक बार अपने रूबरू बतला देते या फिर यह लिख दिया होता कि हमारे चेलों मेंसे जो नपुंसक हो वह सिखलाया करे क्योंकि मर्द तो ऐसी हालतमें देख ही नहीं सकेगा अगर आप इस जगह प्रश्न करें कि सम्भोग कौन सिखलाता है तो हम उत्तर देते हैं कि यह एक मामूली बात है, लड़का लड़की खुद ब खुद सीख लेते हैं इस पर फिर आप कहें कि यह भी मामूली बात है तो हम पूछते हैं कि फिर इसके लिखने की ज़रूरत क्या थी जैसा स-

भोग के वास्ते नहीं लिखा, इसको भी न लिखना था यदि मामूली होती तो लड़कों के ढेर हो जाते ॥

शङ्का १२—स्वामी जी ने यह भी लिखा है कि सन्तान के दूध पिलाने को धाय रहें वा बालक को दूध पिलाया करें क्यों साहिब क्या उस धाय के बालक न होगा वह किस का दूध पिलायगी इसका निर्णय स्वामी जीने अखीर तक क्यों नहीं किया और आप तो वेद पर चलने वाले हैं क्या वेद में यह ऊपर की बेशरम शिक्षाएं भी लिखी हैं ॥

शङ्का १३—स्वामी जी ने थोड़ी सी आड़ लेकर अध्यापक के सामने विवाह होनें को लिखा है पर यह तो कहिये कि इस आंड़ की जरूरत क्या थी सीधा न कह दिया कि ईसाइयों की तरह विवाह होना चाहिये ॥

भला क्यों जी संस्कार विधि में स्वामी जी ने लिखा है कि पुरुष स्त्री की छाती पर व स्त्री पुरुष के हृदय पर हाथ धर के कहे कि तुम मेरे हृदय में सदा वसते रहो अब कहिये तो ? जवान लड़कियों को ऐसा करते, वा आप ऐसे महाशयों को सब के सन्मुख कराते कुछ शरम होगी या नहीं ? और अगर नहीं होगी तो फिर ऐसे ही समय में स्त्री का हाथ और दूसरी जगह रखने को क्यों न कह दिया ? कि इतने ही में पुरुष की परीक्षा हो जाती ॥

शङ्का १४—स्वामी जी ने संस्कार विधि में लिखा है कि जिस दिन स्त्री रजस्वला हो चुके उसी दिन रात के १० वजे विवाह करके दोनों हम विस्तर हो जांय कहिये तो ऐसा लेख भी कहीं आप वेद में बतला सकते हैं और फिर यह भी तो बतलाइये कि रजस्वला होने की प्रथम तीन रात्रि तो सब जगह त्याज्य हैं फिर इस हम विस्तरी की शिक्षा देने का अभिप्राय क्या है और क्या फिर उस लड़का को जिसके साथ लड़की की शादी तजवीज हुई हो दिन रात (इस बात

की आशा में कि लड़की रजस्वला होते ही उसी दिन हमारी शादी हो कर हम विस्तर होना पड़ेगा) लड़की के घर हाजिर रहना पड़ेगा या क्या और यदि वह लड़का कहीं परदेश में हुआ और उस दिन न आ सके तो फिर क्या होगा

शङ्का १५—आप के स्वामी जी ने लिखा है कि जब लड़का लड़की का फोटो मिल जावे तब उनके जीवन चरित्र, देखना चाहिये अब मैं पूछता हूं कि फोटो से किन किन अंगों का या किन किन इन्द्रियों का मिलान किया जावेगा और वह कैसे अर्थात् देखने में बराबर होना चाहिये या लंबाई चौड़ाई में और जिन दिनों में फोटो नहीं निकाला जाता था उन दिनों वेदानुसार कौन रीति प्रचलित थी जिसके बजाय अब स्वामी जी ने फोटो तजवीज किया है और जो यदि कोई रीति थी तो वह अब क्यों बुरी समझी गई ॥

वर्णव्यवस्था प्रकरण ।

स० प्र० पृ० ८५ में स्वामी जी के लेख की मुराद है कि ब्राह्मण होना विद्या पढ़ने से है रज और वीर्य के योग से नहीं ॥

शङ्का १—पहिले तो हमारी वही शंका है जो पहिले कह आये हैं कि परीक्षा होनेके पेस्तर उसकी क्या जाति होगी?

शंका २—आप जो कहते हैं कि विश्वामित्र जी क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये अब जरा इस में पहिले यह देखिये कि विश्वामित्र जी तप के योग से ब्राह्मण हुए था कि विद्या से? अगर विद्या ही से ब्राह्मण होते हैं तो वह खुद विद्वान् थे फिर ब्राह्मण होने के लिये इतने तप करने की क्या आवश्यकता थी और विश्वामित्र में तो ब्रह्मतेज स्थापित पहिले ही से था, देखो भागवत ॥

शंका ३—आप ने लिखा कि ब्राह्मण विद्या पढ़ने से हो-

ता है रज वीर्यसे नहीं अब हम पूछते हैं कि महाराजा दिलीप व राजा दशरथ और महाराजा युधिष्ठिर इत्यादि मूर्ख थे। फिर क्यों इनको आज तक क्षत्रिय कहते हैं! ब्राह्मण क्यों नहीं कहते! सिवाय इसके राजा कर्ण की कथा तो आप को मालूम ही होगी, जब परशुराम जी के पास विद्या पढ़ने को गये थे, और अपनी जाति छिपा कर कहा कि मैं ब्राह्मण हूं परन्तु पीछे जब परशुरामजीको मालूम हुआ कि यह क्षत्रिय है, तब उन्हों ने राजा कर्ण को शाप दिया अब बतलाइये कि अगर विद्या पढ़ने ही से ब्राह्मण होते थे तो कर्ण को जाति छिपाने की क्या जरूरत थी सिवाय इस के आप मनुस्मृतिको भी तो मानते हैं, जरा अध्याय दो श्लोक १५७ व अध्याय ३ श्लोक १६८ को भी देखिये! कि मनु जीने ब्राह्मण कहांसे माना है। ब्राह्मोऽजातौ सूत्र देखिये॥

शंका ४-यह तो बतलाइये कि पुत्र माता पिता के रजवीर्य से उत्पन्न होता है, या और तरह से, अगर वीर्य से है तो ब्राह्मण के वीर्य से ब्राह्मण क्यों न पैदा होगा। क्या आम की गुठली से बबूर पैदा हुआ आप ने देखा है। दूसरे आप अपने समाजियों को समाज में आते ही उन के नामके आगे बिना परीक्षा हुए शर्मा वर्मा लगाने लगते हैं ये क्यों! और समाजी सब ब्राह्मण वेदादि शास्त्र पढ़े हैं या नहीं यदि सब ब्राह्मण मेम्बर नहीं पढ़े तो जाति में उन को शूद्र लिखिये॥

शंका ५-अगर कोई वर्णसंकर कि जिस की मा भङ्गन और बाप बसोर है। उत्तम विद्या प्राप्त कर लेवे तो उस को आप ब्राह्मण मानेंगे या नहीं और फिर उस के हाथ का खाजा खाने में कोई परहेज़ तो न होगा॥

स० प्र० पृ० ८८ में यजुर्वेद के अध्याय ३१ मंत्र ११ का स्वामी जी ने अर्थ किया है कि पूर्ण व्यापक परमात्माकी सृष्टिमें जो मुख सदृश सब में उत्तम हो वह ब्राह्मण

(अब यहां विद्या से गरज नहीं) वल वीर्य का नाम बाहु है, यह जिसमें हो वह क्षत्रिय, उरु कटिके अधोभाग और जानु के ऊपरी भाग का नाम है जो सब पदार्थों और सब देशों में उरुके बल से आवे जावे वह वैश्य, और जो पग के अर्थात् नीचे अंग के सदृश मूर्खत्वादि गुण वाला हो वह शूद्र है, फिर पृष्ठ ८८ पंक्ति १० में लिखा है कि जैसे मुख सब अङ्गों में श्रेष्ठ है वैसे पूर्ण विद्या और उत्तम गुण स्वभाव युक्त होने से मनुष्य जाति में उत्तम ब्राह्मण कहाता है जब परमेश्वर के निराकार होने से मुखादि अङ्ग ही नहीं हैं तो मुख से होना असम्भव है, और जो मुखादि अङ्गों से ब्राह्मण आदि उत्पन्न होते तो उपादान कारण के सदृश ब्राह्मण की आकृति अवश्य होती जैसा मुख का शरीर गोलमोल है वैसे ही उन के शरीरका भी गोल मोल मुखाकृति के समान होना चाहिये क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रोंका शरीर बाहु, उरु, चरणके समान आकार होना चाहिये।

शंका १—इस संसार में जहां तक देखा गया है सब मनुष्य उरुके बल से चलते फिरते हैं क्या आपने किसी मनुष्य को सिर व कमर से भी चलते देखा है? अगर नहीं चलते तो जब सिवाय उरु के किसीको चलने का और सहारा ही नहीं है तो फिर सम्पूर्ण संसार ही वैश्य कहलाया और फिर इतना झगड़ा क्यों? अब तो इस लेख से ब्राह्मण क्षत्रिय और शूद्र कुछ भी न रहे कहिये? अब तो यह न कहोगे कि विद्या पढ़ने से ब्राह्मण और न पढ़ने से शूद्र होता है॥

शंका २—स्वामी जी ने लिखा है कि पग के सदृश मूर्खत्वादि गुण होने से शूद्र, अब बतलाओ कि पग में मूर्खता के गुण क्या हैं? क्या इस में भी कोई ज्ञानेन्द्रिय है? या किसी को कोई दुर्वाक्य कहता है? जिस से मूर्ख कहलाया फिर स्वामी जी ने कहा कि परमेश्वर के निराकार होने से

मुखादि अङ्ग नहीं हैं उस के मुख से उत्पन्न होना असम्भव है तो अब बतलाइये कि निराकार से यह साकार सृष्टि कैसे हुई ? निराकार ही होनी थी और जब वह निराकार है तो फिर उस से ऋग्वेद इत्यादि उत्पन्न हुए व उस से घोड़े गाय इत्यादि हुए (देखो यजुर्वेद अध्याय ३१ मंत्र ७, ८, १२ और दयानन्द तिमिर भास्कर के पृष्ठ ८४ में) यह साकार कैसे ? अगर आप कहें कि वेदोंका अङ्गिरादिके हृदय में प्रवेश हुआ था तो बतलाओ कि अङ्गिरादि कैसे पैदा हुए ? जो कहो कि आप ही हो गये, तो स्वयं होनेसे वही ईश्वर हैं क्योंकि सिवाय ईश्वर के और किसी में ऐसी शक्ति नहीं है, और जो कहो कि ईश्वर से हुए तो क्या ईश्वर मनुष्याकृति है ? और वेद का तो अङ्गिरादिके हृदयमें प्रवेश कर दिया था पर यह गाय घोड़े बकरी इत्यादि कहां से हुए ? क्या इन का भी किसी के हृदय में प्रवेश हुआ था ? और जिन के हृदय में हुआ था वे कौन हैं ? और कहां से हुए थे ? सिवाय इसके स्वामी जी ने जो सत्यार्थ प्रकाश पृ० १८८ में लिखा है कि वह विना हाथ सब कुछ ग्रहण कर सकता है विना पांव के चलता है विना नेत्रों के देखता है और विना कानों के सुनता है तो अब कहिये कि ऐसे सर्वशक्तिमान् का मुख न हो कर भी मुखसे ब्राह्मण का उत्पन्न करना क्या असम्भव है ? तिस पर मनु जी ने भी यही लिखा है कि "लोकानांहि विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः । ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रञ्च निरवर्त्तयत् । मनु० अ० १ । १ लोकों की वृद्धि के हेतु ईश्वर ने मुख, बाहु, ऊरु तथा चरण से ब्राह्मण आदि को बनाया क्या इस जगह इस स्मृति को भी विलाञ्जुली देते हो ॥

शंका ३—यह जो स्वामीजीने लिखा है कि उपादान कारण के सदृश उत्पत्ति होनी चाहिये अर्थात् मुख से मुख की तरह गोल गोल उत्पन्न होते सो तो ठीक है पर यह तो कहिये कि अब उपादान कारण के सदृश ही उत्पत्ति मानी जाती है तो फिर

जब कि सब मनुष्यमात्र योनि ही से उत्पन्न होते हैं तो सब उत्पत्ति स्थान ही की सूरत के क्यों नहीं होते ? इसी तरह निराकार से निराकार ही होना था ॥

सत्यार्थप्रकाश पृ० ८८ पंक्ति २५ में लिखा है कि शूद्र कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यके समान गुण कर्म वाला हो तो वह शूद्र—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य हो जाय ?.और जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कुल में हुआ और उस के गुण कर्म शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जावे चारों वर्णों में जिस वर्ण के सदृश जो २ पुरुष स्त्री हों वह उसी वर्ण में गिने जावें फिर पृष्ठ ८९ पंक्ति १५ में लिखा है-कि इसमें वर्णसङ्करता न होगी न किसी की सेवाका भंग न वंशच्छेदन होगा क्योंकि उनको अपने लड़के लड़कियों के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे सन्तान विद्यासभा व राजा की व्यवस्था से मिलेंगे-फिर पृष्ठ ९१ पंक्ति २८ में है कि उत्तम वर्ण को भय होगा कि हमारी सन्तान मूर्खत्वादि दोष होने से शूद्र हो जायगी और नीच वर्ण को उत्तम वर्ण होने का उत्साह बढ़ेगा; और इस के पहिले पृष्ठ ८६ पंक्ति २७ में है कि जिस मार्ग से पिता माता चले हों उसी मार्ग से सन्तान भी चलै, परन्तु जो पिता माता सत्पुरुष हों तो ? और दुष्ट हों तो उस मार्ग से न चलें ॥

शंका १—अव्वल तो यह बतलाओ कि अब आप ही के लेखानुसार वर्ण जन्म से है या नहीं ? क्योंकि स्वामी जी ने ऊपर साफ ही लिखा है कि अगर शूद्र गुण, कर्म वाला हो तो ब्राह्मण इत्यादि हो जावे व ब्राह्मण इत्यादि गुण, कर्म हीन हो तो शूद्र हो जावे, इस से तो साफ ही यह बात निकलती है कि गुण कर्म की परीक्षा होने के पहिले उस का वही वर्ण रहेगा जहां पैदा हुआ था।

शंका २—ब्राह्मण होने को तो आप के स्वामी जी ने विद्या बतलाई ? पर क्षत्रिय, वैश्य, कब से होगा यह नहीं

लिखा अगर आप कहें कि बलादि होनेसे क्षत्रिय, और जांघ के बल चलने से वैश्य, तो बताओ कि जिस में विद्या और बल दोनों ही बराबर हों उसको क्या कहोगे ब्राह्मण या क्षत्रिय ? और जांघके बलसे तो विद्वान् व मूर्ख सभी चलते हैं फिर इन्हें क्या कहोगे ब्राह्मण वैश्य या शूद्र ?

शंका ३-स्वामी जी के लेखानुसार परीक्षा के पश्चात् ब्राह्मण शूद्र का निर्णय होगा सो तो ठीक हुआ पर यह तो कहिये कि इन चारों वर्णों में भीतरी और बहुत भेद हैं जैसे ब्राह्मणों में कान्यकुब्ज, सरवरिया गौड़ सारस्वत, इत्यादि, क्षत्रियों में पमार, सोलङ्की आदि या वैश्यों में अग्रवाल गहोई, जैनी इत्यादि और शूद्रों में नाई, धोबी, इत्यादि व फिर इन के अन्दर भी, और भेद हैं, जैसे ब्राह्मणों में चौबे दुबे इत्यादि तो अब बतलाओ कि यदि कोई शूद्र परीक्षा के पश्चात् ब्राह्मण हुआ भी तो वह इन भेदों में से किस भेद में होगा अब अगर आप कहें कि वेद में इस भेद की व्याख्या नहीं है तो हम कहते हैं कि वेद में कहीं ऐसा वर्ण भेद भी नहीं है जैसा तुम कहते हो फिर वेद देखनेकी जरूरत क्या है॥

शंका ४-मान लीजिये कि अगर शूद्र में से किसी नाई का लड़का ब्राह्मण हो गया तो फिर उसकी शादी कहां होगी? असली जाति नाई में या किसी ब्राह्मण के यहां ? और अगर आप कहें कि असली जाति नाई के यहां तो फिर उस को ब्राह्मण होने से क्या फायदा है ? और अगर आप कहें कि ब्राह्मण के यहां, तो हम पूछते हैं कि आप के आर्य ब्राह्मण लड़की देने में कुछ उजर तो न करेंगे (यह शङ्का हमारी इस वजह से है कि आज तक आप के यहां जाति भेद देखा जाता है)

शंका ५-अगर किसी एक मनुष्य के चार लड़के हैं और चारों परीक्षा में चार वर्ण में गये हैं तो फिर ये चारों एकही

घर में रह सकते हैं या अलहदा २ रहना चाहिये अगर आप कहैं कि एक में तो फिर वर्ण भेद होने से क्या फायदा अगर आप कहैं कि अलहदा २ तो फिर एक घरके चार घर होते हैं ॥

शंका ६–स्वामी जी ने कहा कि वर्णसंकरता भी न होगी कहिये तो वर्णसंकर किसे कहते हैं क्या अपने बाप को बाप न कह कर दूसरे के बाप को बाप बनाना वर्णसंकरता नहीं इसके सिवाय कोई और बात है ॥

शंका ७–स्वामी जी के लेखानुसार परीक्षा के पश्चात् धनाढय ब्राह्मण का लड़का अगर मूर्ख हो और शूद्रका लड़का विद्वान् हो तो इसका अदल बदल हो जाना चाहिये । कहिये आप के इस नियम को कोई मंजूर भी करेगा । और फिर यह भी बताओ कि जैसी मुहब्बत अपने वीर्य से उत्पन्न हुए पुत्र से होती है वैसी इस वर्णसंकर पुत्र में हो सकती है । कभी नहीं होगी, और फिर जो स० प्र० पृष्ठ १२० में स्वामी जी ने एक वाक्य लिख कर अर्थ किया है कि हे पुत्र ! तू मेरे अङ्ग २ से उत्पन्न हुआ है मेरा आत्मा है मुझसे पूर्व मत मरे, अब कहो उस अंग २ से उत्पन्न हुए वीर्यका असर इस बदला बदली में कहां जायगा और क्या इस बदले के पुत्र को भी अंग २ में से उत्पन्न हुआ मानोगे कि जो कहते हो वर्णसंकरता न होगी ॥

शङ्का ८–अगर किसी धनाढयका लड़का मूर्ख होकर आप के नियमानुसार शूद्रके यहां भेज दिया गया और उस धनाढय को कोई विद्वान् पुत्र न मिले तो अब कहिये कि वह निर्वंशी ही बना रहे और फिर उसका धन कहां जायगा, क्या आपकी समाज में जमा होना चाहिये ? ॥

शङ्का ९–स्वामीजी ने लिखा है कि जिस मार्ग से माता पिता चले हों उसी मार्गसे चलना चाहिये परन्तु जब वे सत्पुरुष हों तब, अब कहिये कि आपके स्वामी जी सत्पुरुषोंमें

हैं या मूर्खों में ? अगर सत्पुरुषों में हैं तो फिर आप सब क्यों गृहस्थी छोड़ संन्यासी नहीं होते ? (स्त्रियोंके वास्ते नियोग हो जायगा) और जो आप कहैं कि वे हमारे पिता माता नहीं है गुरु हैं तो देखिये श्राद्धप्रकरणमें स्वामीजी पिता माता की जगह आ सकते हैं या नहीं ? और इतने पर शायद आप कहैं कि पितर में पिता माता का अर्थ नहीं है, तो इस शङ्काके दूर करनेको स्वामीजीका यजुर्वेदभाष्य अध्याय १९ देख लीजिये और जो पृष्ठ ८७ पंक्ति १४ में स्वामी जी ने लिखा है कि जो कोई कृश्चियन व मुसलमान हो गया हो उसको ब्राह्मण क्यों नहीं मानते ? वाह ! क्या ही अच्छा प्रश्न है। ज़रा उस कृश्चियन हुए ब्राह्मणसे ही पूछेंगे कि तुम पहिले कौन जाति थे ? देखिये वह क्या उत्तर देता है अगर कहीं वह कहदे कि ब्राह्मण थे, तो क्या खामोश होकर समझ लीजिये कि जाति जन्म से है और फिर भी आप कहैं कि उसको ब्राह्मण क्यों नहीं मानते, तो इस मत भेद और जाति भेदमें बड़ा फरक है जब तक वह स्वधर्ममें है तब तक हमारे यहां मान्यता के योग है जब वह धर्म छोड़देगा नाम उसका उठ जायगा परन्तु जाति उसकी वही रहेगी जो जन्मसे थी विद्या से तो चाहे भंगी इत्यादि कोई भी हो आपही उसको ब्राह्मण बनाकर उसके हाथका खा सकते हैं परन्तु यहां तो विरादरीके सदाचार प्रतिकूल कर्म करनेसे पतित हो जाता है।

अब अगर हमारे सनातनधर्मानुसार वेद वाक्य इत्यादि से अपनी तसल्ली करना है तो दयानन्द ति० भा० पृष्ठ ९२ से १०० तक देख लीजिये ॥

निन्दा स्तुति प्रकरण ।

स० प्र० पृ० ९७ में लिखा है कि कभी किसी की निन्दा न करें अर्थात् जो गुणोंमें दोष व दोषोंमें गुण लगाना ये निन्दा है गुणों में गुण और दोषोंमें दोष कहना स्तुति है अर्थात् मिथ्याभाषणका नाम निन्दा और सत्यभाषणका नाम स्तुतिहै

शङ्का १—यह तो कहिये कि इस जरासी बात में इतना भारी फरक क्यों ? ज़रा बतलाओ तो ? कि स्तुतिसे आदमी प्रसन्न होता है या अप्रसन्न ? फिर जब यथार्थ कहनाही स्तुति है तो अगर हम किसी अन्धेको अन्धा कहें व किसी की महतारीने खसम कर लिया हो और आप उससे कहें कि तेरी माने खसम करलिया है तो वह आपसे प्रसन्न होगा या अप्रसन्न ? कभी प्रसन्न न होगा, बल्कि मार बैठेगा, फिर यह स्तुतिकैसी ? (वाह! खूब जूता खानेकी स्तुति बतलाई) अगर वाजिबी स्तुति का समाधान है तो द० ति० भा० पृष्ठ १०२ व १०३ में देखो ॥

* पितर देवता श्राद्ध प्रकरण *

स० प्र० पृ० ९८ वा ९९ में स्वामी जी ने मनुस्मृतिके तीन श्लोक लिखकर पंक्ति १५ में अर्थ किया है कि दो यज्ञ ब्रह्मचर्य में लिख आये हैं अर्थात् एक वेदादि शास्त्रका पढ़ना पढ़ाना सन्ध्योपासन, योगाभ्यास दूसरा यज्ञ, विद्वानोंका सङ्ग सेवा, पवित्रता दिव्य गुणोंका धारण, विद्याकी उन्नतियें दोनों यज्ञ सायंकाल और प्रातःकाल करना चाहिये, तीसरा पितृयज्ञ अर्थात् जिसमें विद्वान् ऋषि जो पढ़ने पढ़ाने हारे पितर माता पिता आदि ब्रह्मज्ञानी और परम योगियों की सेवा करना ॥

शङ्का १—जब कि हवन देवयज्ञ का नाम है और देवता आप के विद्वान् हैं तो विद्वानों के सत्कार की क्या आवश्यकता रही, होम कर दिया विद्वान् प्रसन्न हो गये, और अब फिर अतिथि मानने की आवश्यकता क्या रही ? कौनसी बात मानोगे ॥

शङ्का २—स्वामी जी अर्थमें पितर, देवता ऋषि, सब एक ही प्रकार व एक ही अर्थ में घटाते हैं और इन श्लोकों से यज्ञों की विधि अलहदा २ पाई जाती है जैसे पढ़ना पढ़ाना ब्रह्मयज्ञ, तर्पण, श्राद्ध, पितृयज्ञ, होमादिक देवयज्ञ, भूतोंको बलि देना, भूतयज्ञ अतिथिभोजन, मनुष्य यज्ञ, अब कहिये

अगर सब एक ही थे तो फिर मनु जी ने पांच विधि क्यों लिखी? क्या मनुजीको समझ स्वामी जी के बराबर भी न थी!

शङ्का ३–फिर मनुजी ने अध्याय ३ श्लोक ८२ में लिखा है कि पितरों से प्रीति चाहने वाले तिल जौ मूल फल जल इन से श्राद्ध करें पितरके अर्थ एक ब्राह्मण को भोजन करावें और जब कि मनुजी वेदाध्ययनसे ऋषि, होमसे देवता, श्राद्धसे पितर, अन्नसे मनुष्यका पूजन करें, यह लिखते हैं और आपके कथनानुसार सब एक ही हैं तो फिर ये पृथक् २ पूजन क्यों लिखे और अगर आपके लिखे बमूजिब विद्वानोंका नाम देवता मानते हैं तो कहिये देवतोंकी प्रसन्नता होमसे लिखी है क्या आपके विद्वान् सिर्फ होम ही से प्रसन्न हो जांयगे? अगर हो सकें तो बहुत अच्छा है क्यों चूल्हा चौके की फिकर कीजिये जब कोई विद्वान् आवे तभी होम लगा दिया जावे फिर मनुजी कहते हैं कि पितरों से प्रीति चाहने वाले तिल, जौ, फल, फूल इनसे श्राद्ध करें–अब कहिये कि आपके लिखे बमूजिब माता पिता ब्रह्मज्ञानी परमयोगी इत्यादिको शान्ति इस तिल जौ से हो सक्ती है और फिर अन्न देने की कोई जरूरत तो न होगी,

स० प्र० पृ० ९९ पंक्ति २८ में लिखा है कि विद्वानों का नाम ही देवता है और यह भी लिखा है कि जो साङ्गोपाङ्ग चारों वेदों के जानने वाले हैं उन्हीं का नाम ब्रह्मा और जो उनसे न्यून हों उनका नाम देव वा विद्वान् है–

शङ्का १–आप के स्वामी जी वेदों के उपाङ्गको ऋषिकृत बने कहते हैं या नहीं, और कहते हैं तो जब तक कि वेदाङ्ग बने ही नहीं थे संहितामात्र वेद था, उस वक्त ब्रह्मा संज्ञाही न होनी थी क्योंकि वेद उपाङ्ग सहित जानने से ब्रह्मा होता है फिर अथर्व० में जो यह लिखा है कि सृष्टिमें सबसे पहिले ब्रह्मा हुए तो (ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव) अब बतलाओ कि उपाङ्ग जाने विना क्यों वेद में ब्रह्मा शब्द लिखा है?

क्या वेद भी झूठा है? और जब कि आपके लेखानुसार वेदाङ्ग पढ़ने वाले ब्रह्मा कहलाये तो अब कहिये कि उपाङ्ग बनाने वाले को आप क्या कहेंगे क्योंकि पढ़ने वालेसे बनाने वाला बड़ा होता है ॥

शङ्का २–रावण भी तो चारों वेद उपांग सहित पढ़ा था कहिये उस को आज तक किसी ऋषि मुनि आदिने ब्रह्मा क्यों नहीं कहा, शायद वह स्वामी जी से ज्यादह मूर्ख रहे होंगे और रावण ही क्यों? बहुत से ऋषि मुनि वेदों के उपांग सहित जानने वाले होगये हैं और हाल में आप के स्वामी जी भी तो वेदके जानने वाले थे फिर ब्रह्मा एक से ज्यादा कहीं नहीं सुनते अब कहिये ये कहना स्वामी जी का सत्य या असत्य है? ।

स० प्र० पृ० ९९ पंक्ति २३ से स्वामी जी ने श्राद्ध तर्पण का अर्थ करके अखीर में कहा है कि यह जीवितों को है स-रों को नहीं और फिर ऋषि तर्पण पितृ तर्पण लिख के इससे आगे लिखे अर्थ सिद्ध किये हैं —

१–जो परमेश्वर परमात्मा और पदार्थ विद्या में निपुण हो वह (सोमसद्)

२–जो अग्नि अर्थात् विद्युदादि के जानने वाले हों वे (अग्निष्वात्त)

३–जो उत्तम विद्या बुद्धि युक्त उत्तम व्यवहारमें स्थित हों वे (बर्हिषद्)

४–जो ऐश्वर्य्यके रक्षक महौषधि पान करने से रोग रहित और अन्यके ऐश्वर्य्य रक्षक ओषधियोंको देकर रोग नाशक होवें वे (सोमपा)

५–जो मादक और हिंसाकारक द्रव्योंको छोड़कर भोजन करते हैं वे (हविर्भुज) ।

६—जो जानने के योग्य वस्तुके रक्षक और घृत दुग्धादि खाने पीने वाले हों वे (आज्यपा)

७—जिनका अच्छा धर्म करने का सुखरूप समय हो वे (सुकालिन्)

८—जो दुष्टोंको दण्ड और श्रेष्ठोंका पालन करने हारे न्याय कारी हों वे (यम)

९—सन्तानोंके अन्न और सत्कारसे रक्षक व जनक हों वे (पिता)

१०—जो अन्न और सत्कारोंसे सन्तानोंका मान करें वह (माता)

११—अपनी स्त्री तथा भगिनी सम्बन्धी और एक गोत्र के तथा अन्य कोई भद्र पुरुष व वृद्ध हो उन सबको अत्यन्त श्रद्धासे उत्तम अन्न वस्त्र,सुन्दर पान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्ति करना है वह श्राद्ध व तर्पण कहाता है ॥

शङ्का १—अगर विद्वानों का नाम ही पितर व देवता है तो कहिये पितृकर्म अपसव्य दक्षिण मुख होकर व देवकर्म सव्य पूर्व मुंह होकर करने को क्यों लिखा (देखो मनुस्मृति अ० २ श्लोक २१४ व २७९) और अगर आप कहें कि मनुस्मृति में भी किसी ने मिला दिया है तो अपनी संस्कारविधि सम्वत् ४७की छपी हुई के पृ० १०४ में देख लीजिये कि पितरों के वास्ते अपसव्य व दक्षिण मुंह होना लिखा है या नहीं ॥

शङ्का २—वेद में जो यह लिखा है कि जो सपिण्ड पितर यमलोकमें हैं उनको ये अन्न प्राप्त हों (देखो यजु० अ० १९ म० ४५ द० ति० भा० के पृ० १११ में) अब कहिये आपके विद्वान् पितर इस लोक में हैं या यमलोक में ? और फिर जो इसी श्लोक में सपिण्ड शब्द कहा तो कहिये क्या विद्वान् सब ही सपिण्ड होते हैं ?

शङ्का ३—यजुर्वेद अ० १९ मं० ४६ में लिखाहै कि समदर्शी मनस्वी हमारे सपिण्ड पितर हैं (देखो द० ति० भा० पृ० १११ उनकी धन सम्पत्ति हमारे पास १०० वर्षतक वास करे । अब कहिये इस वेद आज्ञाके बमूजिब आपके विद्वान्

पितरों की धन सम्पत्ति छीन सकते हैं या नहीं ? ॥

शङ्का ४—यजुर्वेद अ० १९ मंत्र ४७ में देवताओं व पितरों के दो मार्ग बतलाये हैं जो स्वर्ग व पृथ्वी के मध्य वर्त्तमान हैं (देखो द० ति० भा० पृष्ठ १११) अब बतलाओ कि विद्वानों को पितर मानें तो वे स्वर्ग व पृथ्वीके मध्य में रहते या लटकते हैं और जो आप कहें कि क्या मरे हुए पितर बीच में रह सकते हैं ? तो बेशक वह प्राण मात्र मूर्त्ति वायुके आधार से रह सकते हैं ? क्योंकि वेद किसी तरह झूठा नहीं हो सक्ता।

शङ्का ५—यजुर्वेद अ० १९ मं० ६० में लिखा है कि जो अग्नि में जलाये हुये हैं और जो अग्नि संस्कार से रहित हैं प्राणमात्र मूर्त्ति हैं वे मेरा कल्याण करें अब बतलाओ कि कहीं जलाये हुए विद्वान् भी मिल सकते हैं ? जिन को पितर मानें, और जो स्वामी जी ने लिखा है कि क्या वहां तार या डाक जाती है, सो यह कहना उन का जब कि वह अपने को वेद का ज्ञाता बतलाते हैं बड़ी भूल है, यदि वे यजुर्वेद व अथर्व के प्रमाण देखते तो ऐसा कभी न लिखते क्योंकि उन में साफ लिखा है कि इस मन्त्र से संस्कृत होकर भोजन पिण्ड पितरों के वास्ते पहुंचता है।

शङ्का ६—जो स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १०० में पितरों की व्याख्या की है बतलाओ कि पहिले नम्बर के पितरों में पदार्थ विद्या जानने वाले चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान या अंगरेज सभी पितर होंगे या नहीं, इसी तरह दूसरे नम्बर के पितरों में तारबाबू रेल के गार्ड इत्यादि ही होंगे या और कोई ? और नम्बर ३ में तो अंगरेज़ोंके सिवाय और कोई हो ही नहीं सकेगा क्योंकि वेही १०० में ८८ तक पढ़े हुए हैं और चौथे नम्बर में शायद डाक्टर और हकीम ही होंगे क्योंकि वही लोग औषधि जानते व दूसरों को आराम करते हैं और नम्बर ५ में सरावगी व वैष्णव, और शैव, यह

होंगे क्योंकि इन लोगों के बराबर हिंसाकारक द्रव्योंसे ज्यादह परहेज दूसरोंको नहीं होता । और छठवें नम्बरमें तो सम्पूर्ण संसार ही पितर होगा क्योंकि घी दूध सब ही खाते हैं और सातवें नम्बर में सिर्फ अमीर लोग होंगे क्योंकि इन्हीं का अच्छा समय जाता है और आठवें नम्बर में सिवाय राजा के कोई हो ही नहीं सकता अब कहिये कि स्वामी जी के लेखानुसार तो संसार भर चाहे कोई जाति हो आप का पितर अर्थात् पिता हुआ और पुत्र का नाम ही न रहा क्या यह बात यथार्थ है और इस को आप मानते हैं या नहीं और अगर मानते हैं तो बस खबरदार हो जाइये ? व आज से रिश्ते का नाम मिटा दीजिये क्योंकि जाहिरा देखने में यद्यपि वह आप का भाई या भतीजा या लड़का है या कोई दूसरी कम कौम है परन्तु उस ने भी दूध पिया है व अभी तक दूध खाता होगा आज से उस को पिता ही कहिये और फिर अगर आप के समाजियों में से किसी को कोई जाति ऊंच नीच भली बुरी गाली दे या मार बैठे तो इस का बुरा न मानिये क्योंकि वह भी शायद स्वामी जी के लेखानुसार किसी किस्म के पितरों में से आप का पितर जरूर ही होगा और कदाचित् अगर और किसी नम्बर में न भी आया तो दूध पीने वाले पितरोंमें तो अवश्य ही आवेगा सिवाय इस के अब किसी आदमी की तावेदारीमें बल्कि जूता तक उठाने में आप को परहेज न करना चाहिये क्योंकि संसार में पितृ सेवा ही मुख्य धर्म है अगर आप इतने पर कहें कि पितृशब्द से पिता का अर्थ नहीं है तो आप ही कहिये क्या होगा ? जरा स्वामी जी का लेख स० प्र० पृ० ९९ पंक्ति १६ वा उन्हीं का यजुर्वेद भाष्य अ० १९ को देख लीजिये ।

(वाह स्वामी जीने क्या अच्छे जीवित पितरोंका श्राद्ध करवाया) और फिर यह भी तो कहिये कि मनु जी ने अ०

१ श्लोक ६६ में कहा है कि पितरों का १५ दिनका १ दिन व १५ रातकी १ रात होती है सो क्या ये आपके जीवित पितर बराबर १५ दिन सोते व १५ दिन जागते हैं ? और फिर मनु जी ने पितृश्राद्धके वास्ते सिर्फ अमावस बतलाई है जो १२ महीनेमें १२ होती हैं अब कहिये ग्यारह महीना १८ दिन आप अपने जीवित पितरों को भूखा रख सकते हैं ? सिवाय इसके पितरों के पिण्डदान करने को वेदी के आगे शतपथ में उल्मुक धरने को लिखा है अब कहिये जीवित पितरों के आगे आप क्या रक्खेंगे बस अब तो यही कह दीजिये कि यह मंत्र व श्लोक वेद व मनुस्मृतिमें किसी ने मिला दिये हैं और इनको हम नहीं मानते क्योंकि इसी में आप को सुआयश मिलती है। भाई ! पितृव्याख्या तो स्वामी जी ने लिखी है उसको तो मानना ही पड़ेगा और संसारको पिता कहना ही होगा और इतने पर फिर आप कहें कि स्वामी जी ने सोमसद इत्यादि की व्याख्या की है पितर नहीं कहा तो जरा तर्पण ही को देख लीजिये जिस पर से स्वामीजीने यह व्याख्या की है। *

स० प्र० पृ० १०१ पंक्ति २५ में धन्वन्तरये स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा। द्यावापृथिव्यै स्वाहा। पृष्ठ १०२ में ओं सानुगायेन्द्रायनमः ओं सानुगाय यमाय नमः इत्यादि लिख कर कहा है कि इन मंत्रों से भागों को रख कर जो कोई अतिथि हो उसको खिला देवे या अग्नि में छोड़ देवे फिर लवणान्न दाल भात रोटी आदि लेकर ६ भाग पृथ्वी में धरे।

शङ्का २—क्यों जी इनका अर्थ क्यों नहीं लिखा ? क्या इसमें कोई भेद है क्योंकि और जगह तो स्वामी जी ने एक

नोट—अगर कोई महाशय इस पितृ तर्पण व श्राद्ध विषय का पूरा २ निर्णय जानना चाहते हों और वेदशास्त्रादि के प्रमाणों तथा युक्तियों की बहार देखना चाहते हों तो ब्रह्मप्रेस इटावासे श्राद्ध मीमांसा नामक पुस्तक मंगाकर देखें।

शब्द भी व्यर्थ नहीं छोड़ा है फिर यहां अर्थों का क्यों भोजन कर गये ॥

शङ्का २–क्यों साहिब । इन भागों से क्या प्रयोजन है ? आप तो विद्वानों का नाम देवता कहते हैं फिर यह भाग किसके ? क्या वनस्पति और लक्ष्मी रोटी खाती हैं या पृथ्वी खाने आती है ईश्वर मूर्ति के सामने तो भोग रखने में आपको बड़ा रञ्ज होता है और आप पृथ्वी जड़ पदार्थ को भोग रखते हैं यह क्या बात है और फिर अनुचरों सहित इन्द्र, वरुण, यम, इत्यादि के नाम से रखना और भाग देना यह तो आप सनातन कथा ले बैठे अगर पुरानी नहीं है तो कहिये यम का नाम यहां भी हाकिम ही का होगा या नहीं और जब शायद वह अनुचरों सहित आ जावेंगे तब कहिये गरीबों का क्या हाल होगा उनका तो एक ही दिन में दिवाला निकलता है फिर ये रोज २ का नियम कहां तक चलेगा ।

शङ्का ३–आप तो विद्वानों को ही देवता कहते हैं फिर कहिये यह भद्रकाली वनस्पति जल मरुत इत्यादि भी कोई विद्वान् घर २ फिरने वाले हैं जिन्हें पृथक् २ भाग देने को बतलाया है और जब विद्वान् ही देवता हैं तो यह पन्द्रह सोलह नाम अलहदा २ क्यों, क्या उन विद्वानों के नाम के साथ यह भद्रकाली वनस्पति इत्यादि का विशेषण रहता है सिवाय इसके इन पन्द्रह सोलह विद्वानों को रोज २ कहां तक कोई खिलावेगा इस पर अगर आप कहें कि एक २ ग्रास निकालें तो कहिये कि क्या वे १ ग्रास से संतुष्ट हो सकते हैं कभी नहीं । अगर आप कहें कि ये ईश्वर के नाम हैं तो हम कहते हैं कि ईश्वर एक है एक ही भाग निकालना योग्य है और अगर आप कहें कि उसके अनन्त नाम हैं तो नामानुसार भाग भी अनन्त होना चाहिये फिर ये पन्द्रह सोलह ही क्यों ।

शङ्का ४—स्वामी जी ने यहां यम का नाम वायु लिखा है और पितृश्राद्ध में न्यायकारी बतलाया है कहिये इस में सत्य क्या है। क्या साफ कहने से कुछ शरम आती है! देवता देवता ही है व विद्वान् विद्वान् ही हैं॥

स० प्र० पृ० १०२ पंक्ति २१ में लिखा है कि हवन करने से अज्ञात अदृष्ट जीवोंकी जो हत्या होती है उसका प्रत्युपकार करना।

शङ्का १—कहिये पृ० १८२ में स्वामी जी ने पाप क्षय नहीं माना, इसी तरह हवन वायु शुद्धिको बतलाया और अब यहां पापक्षय मानते हैं और इसी के वास्ते हवन भी कहते हैं इन में सत्य क्या है! और किस जगह कलम फेरी जाती है।

स० प्र० पृ० १०३ में लिखा है कि विना अतिथियों के खिलाये सन्देह की निवृत्ति नहीं होती।

शङ्का १—कहिये क्यों! क्या किसी और विद्वान् से संदेह की निवृत्ति नहीं हो सकती? और जिसे अतिथि खिलाने की सामर्थ्य न हो वह क्या संदेह ही में पड़ा रहे।

शङ्का २—अगर कोई अतिथि मूर्ख हुआ तो उस से क्या संदेह की निवृत्ति होवेगी? और क्या उस मूर्ख को अतिथि न मानना चाहिये?

शङ्का ३—अतिथि का खिलाना स्वामी जी के लेखानुसार सन्देह दूर करनेको है भला जिसे कुछ सन्देह ही नहीं हो तो उसे अतिथि को खिलाने की कोई जरूरत तो नहीं है॥

पण्डित प्रकरण

स० प्र० पृ० ११० पं० ७ में स्वामी जी कहते हैं कि जिसकी प्रज्ञा सुने हुए सत्य धर्म के अनुकूल हो और जिसका श्रवण बुद्धिके अनुसार हो और जो कभी आर्य अर्थात् श्रेष्ठ धार्मिक पुरुषों की मर्यादा का छेदन न करै वही पण्डित है॥

शङ्का १- कहिये स्वामी जी ने तो बिलकुल अपने इस लेख के विरुद्ध ही वर्त्ताव किया है, जैसा पहिले आपने सुने हुए क्या देखे हुए सनातन धर्म के प्रतिकूल सत्यार्थप्रकाश बनाया दूसरे पहिले सत्यार्थप्रकाश में मृतकों का श्राद्ध माना और इसमें मेट दिया, तीसरे पृ० १०२ में पाप के क्षय होने को हवन कहा और पृ० १८६ में पाप क्षय होना मानते ही नहीं चौथे स० प्र० के शुरूमें ९ ग्रहोंके नाम ईश्वरके बतलाये हैं और पृ० ३१ में आप शङ्का करते हैं कि क्या ये ग्रह चैतन्य हैं ? इत्यादि अब यह पण्डिताई कैसी है समझिये ॥

नियोगप्रकरण

सत्यार्थप्रकाश पृ० ११२ पं० १६ में एक श्लोक मनुस्मृतिका लिख स्वामी जी ने कहा है जिस स्त्री व पुरुष का पाणि ग्रहण मात्र संस्कार हुआ हो और संयोग अर्थात् अक्षतयोनि स्त्री और अक्षत वीर्य पुरुष हों उनका अन्य स्त्री वा पुरुषके साथ पुनर्विवाह होना चाहिये किन्तु ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, वर्णों में क्षतयोनि स्त्री व क्षतवीर्य पुरुषका पुनर्विवाह न होना चाहिये फिर पृ० ११२ पं० २४ में प्रश्नोत्तर करके फिर विवाहके दोष बताये हैं कि प्रथम स्त्री पुरुषमें प्रेम न्यून होना, दूसरे जब स्त्री पुरुष प्रति स्त्री मरनेके पश्चात् दूसरा व्याह करना चाहें तो प्रथम स्त्रीके पूर्व पतिके पदार्थोंको उड़ा ले जाना और उसके कुटुम्ब वालों का उन से झगड़ा करना, तीसरे बहुत से भद्र कुल का नाम व चिन्ह भी न रहना और उनके पदार्थों का छिन्न भिन्न होजाना चौथे पतिव्रत व स्त्रीव्रत धर्म नष्ट होना इत्यादि दोषों के अर्थ द्विजों में पुनर्विवाह कभी न होना चाहिये, फिर पृष्ठ ११३ पंक्ति ५ में लिखा है कि जो ब्रह्मचर्य न रह सके तो नियोग करके पुत्र उत्पन्न करले, और इसी पृष्ठके पंक्ति ४ में गोद लेना भी लिखा है, फिर इसी पृष्ठ ११३ में पुनर्विवाह व नियोगके भेद बतलाये हैं जिनका सारांश यह है

१—जैसे विवाहमें स्त्री मा बापको छोड़कर पतिके यहां चली जाती है इसी तरह पुनर्विवाहमें भी घर छोड़ पतिके यहां रहती है ॥

२—विवाहिता स्त्रीके लड़के उसके पतिके दायभागी होते हैं और नियोगमें मृतक पतिके और उसीका गोत्र रहता है

३—विवाहिता स्त्री पुरुषको परस्पर सेवा पालन करना अवश्य है और नियुक्त स्त्री पुरुषको इससे कुछ सम्बन्ध नहीं।

४—विवाहिता स्त्री पुरुष का सम्बन्ध मरण पर्यन्त रहता है और नियुक्त स्त्री पुरुषका कार्य पश्चात् छूट जाता है ॥

५—विवाहिता स्त्री पुरुष एक जगह रहते हैं और नियुक्त स्त्री पुरुष अपने २ घर पर, फिर आप नियोगसे दश सन्तान उत्पन्न करनेकी आज्ञा वेदमें बतलाते हैं फिर पृष्ठ ११४ से ११५ तक आप कहते हैं कि यह काम वेश्याके सदृश नहीं है, और जैसे व्याहमें शरम नहीं होती ऐसे ही नियोगमें न करनी चाहिये। किन्तु जब नियोग करे तब अपने कुटुम्बके स्त्री पुरुषों के सन्मुख कहे कि हम दोनों नियोग सन्तान उत्पत्ति के लिये करते हैं फिर कहा कि इसमें भी कन्या वरकी सम्मति लेना चाहिये फिर लिखा कि अपने वर्णमें या अपनेसे उत्तम वर्णमें नियोग करना वीर्य सम या उत्तम वर्णका चाहिये, नीचका नहीं फिर पृष्ठ ११६ में आप नियोगके वास्ते वेदके प्रमाण देते हैं फिर इसी ११६ में आप एक मन्त्र लिखकर उसका अर्थ करते हैं कि हे विधवे! तू इस मरे हुए पतिकी आशा छोड़के बाकी पुरुषोंमेंसे जीते हुए दूसरे पतिको प्राप्त हो, और इस बातका विचार निश्चय रख कि जो तुझ विधवाके पुनः पाणिग्रहण करने वाले नियुक्त पतिके सम्बन्धके लिये नियोग होगा तो जना हुआ बालक उसी नियुक्त पति का होगा और जो तू अपने लिये नियोग करेगी तो वह तेरा होगा फिर पृष्ठ

११७ में आप एक मंत्रका अर्थ करके कहते हैं कि स्त्री ११ पति तक व पुरुष ११ स्त्री तक नियोग कर सकते हैं फिर पृष्ठ ११९ में मनुस्मृति के दो श्लोक लिख कर आप अर्थ करते हैं कि विवाहिता स्त्री पतिके परदेश जाने पर ८ वर्ष, विद्या कीर्ति को जाने पर ६ वर्ष, धनादि को जाने पर ३ वर्ष तक वाट देखे पश्चात् नियोग करके सन्तान उत्पन्न करले और जब विवाहित पति आजावे तब नियुक्त पति छूट जावे ऐसे ही पुरुष के लिये नियम है—फिर लिखा कि वंध्या आठवें वर्ष, संतान होकर मरजावे उसे दशवें वर्ष, और कन्या ही कन्या हों पुत्र न हों तो ग्यारहवें वर्ष और स्त्री पुरुष अप्रिय बोलने वाले हो तो उसी समय नियोग से सन्तान उत्पन्न करले फिर पृष्ठ १२० में आप कहते हैं कि गर्भवती स्त्री से १ वर्ष समागम न करने के समय में पुरुष व स्त्री से न रहा जाय तो किसी से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति कर दें (धन्य है स्वामीजी नियोगके बहाने अच्छा व्यभिचार चलाया)

शङ्का १—कहिये ये नियोग पतिव्रत धर्म कायम रखनेको है या मिटाने को ? अगर आप कहें कि कायम रखने को है तो कहिये पतिव्रत धर्म किस को कहते हैं और वह एक पति (जिसके साथ भांवर पड़ी हो) के साथ कायम रहता है या ग्यारह पति करने पर ? अगर आप कहें कि ग्यारह पति करने पर तो कहिये इस का प्रमाण क्या है, यदि आप कहें कि वेद मंत्र है, सो आपकी आड़ लेने को तो यह ठीक है पर यह तो देखिये कि जो स्वामी जी ने अर्थ किये हैं वह यथार्थ हैं या अपना मतलब सिद्ध करने को है और वेद में भी कहीं नियोग प्रकरण है ? और जो मंत्र स्वामी जी ने लिखे हैं वे जिस विषयके हैं उसी विषयमें लिखे हैं ? या कहीं के कहीं ? जरा देखिये स्वामी जी ने ऋग्वेद मन्त्र १० सूक्त ८५ मंत्र ४५ को अपनी पुष्टि में लिखा है यह

ब्याह में आशीर्वाद देने का मंत्र है या नियोग का, फिर ऋ० मं० १० सू० ४० मं० २ का हवाला दिया है देखिये इसमें नियोग का क्या जिकर है फिर पृ० ११९ में २ श्लोक मनुस्मृतिके लिखे हैं उन्हीं को जरा पढ़ लीजिये फिर स्वामीने ऋग्वेद मंत्र १० सू० १८ मं० ८ में क्या लिखा है, जरा पक्ष छोड़के कहिये कि स्त्रीका प्राणपति मरा पड़ा है उसका दुःख पूछना अलहदा रहा आप उसी समय उस स्त्री को नियोगकी सम्मति देते हैं, क्या ऐसा कभी वेद कह सकता है ? कभी नहीं क्यों कि वेद ईश्वरीय वाक्य है वह ऐसे व्यवहार की आज्ञा कभी नहीं देगा जरा सोचने की बात है कि अगर ईश्वर को इसी तरह हर स्त्री पुरुष को दश २ पुत्र ही देना पसन्द होता तो वह क्या नहीं कर सक्ता था सिवाय इसके सृष्टि की उत्पत्ति से आज तक जितने विद्वान् हुए हैं क्या स्वामी जी की अपेक्षा वे सब मूर्ख थे ? और अगर नहीं थे तो फिर आज तक क्यों यह नियोग (व्यभिचार) नहीं चला और सबको जाने दीजिये, इस समय भी एक से दूसरा पति होते ही लोग स्त्री को व्यभिचारिणी कहते हैं या पतिव्रता यह आप आंख से देख सक्ते हैं फिर कैसे माना जावे कि वेद में ग्यारह पति की आज्ञा है ॥

शङ्का २—स्वामी जी ने पृ० १२० में लिखा है कि यदि गर्भवती स्त्रीसे एक वर्ष समागम करे विना न रहा जावे तो किसी से नियोग करके पुत्रोत्पन्न करदे कहिये तो जब एक गर्भ पेट में रक्खा ही है तब दूसरा वह स्त्री कहां रक्खे क्या कभी ऐसा भी हो सक्ता है ? और इसीको आप वेदकी आज्ञा समझते हैं और तिस पर मजा यह है कि ईश्वर क्या मानो स्वामी जी का तावेदार है ? कि जब ही नियोग हुआ और पुत्र तैयार है कहिये यह लेख स्वामीजीका निर्मूल है या नहीं ?

शङ्का ३—यह तो बतलाओ कि यह नियोग कामाग्नि बुझाने को है या पुत्र उत्पन्न करनेको ? अगर कामाग्नि बुझाने को है तो फिर पुत्रकी आड़ क्यों ? और अगर पुत्रकी है तो एक पुत्र पेटमें रहते दूसरेके वास्ते नियोगकी आज्ञा देना यह कैसा ? सिवाय इसके जब गोद लिया हुआ भी पुत्र हो सकता है तो फिर इस निर्लज्ज सागर नियोगकी जरूरत ही क्या है ? और शायद अगर नियोगसे भी पुत्र न हुआ तो फिर आप क्या कर सकते हैं ? कहिये ऐसे समयमें वह स्त्री दोनों दीनसे गई या नहीं ! कि इधर पतिव्रत धर्म गया और उधर पुत्र भी न हुआ ॥

शङ्का ४-पुनर्विवाह के वास्ते तो एकपति की मनाई कीगई कि वह स्त्री दूसरेकी हो जावेगी और नियोगके वास्ते ११ पतिकी आज्ञा दी गई कहिये तो ? क्या इसीका नाम पति व्रत धर्म है ?

शङ्का ५-स्वामीजी इसके पहिले एक मन्त्र (देखो स० प्र० पृ० १२०) लिख आये हैं कि हे पुत्र ! तू अङ्ग २ से उत्पन्न होता है कहिये यहां वह किसके अङ्गसे उत्पन्न होगा मृतक पतिके या नियोगके ? और उसमें असर किसका होगा ? सिवाय इसके अब वह पुत्र अपने बापकी जगह किसका नाम बतलावे अगर आप कहें कि मृतक का तो कहिये कि मृतकके अङ्ग २ का वीर्य तो उसमें बिलकुल नहीं है फिर उसका कैसे हो सकता है ? और जो आप कहें कि नियोगीका तो फिर कहिये मृतकका नाम कहां रहा ? ॥

शङ्का ६-स्वामी जीने तो नियोगमें भी वर कन्या की सम्मति लेना लिखा है अब अगर शायद कन्याने कोई नीच जातिसे नियोग पसन्द किया तो यह नियोग हो सकेगा या नहीं ? और ऐसे समयमें तो स्वामीजीका एक नियम जरूर ही भङ्ग होगा ॥

शङ्का ७–किसी समय अगर स्त्री पुरुष दोनों ने पुत्रार्थ नियोग किया और उससे कोई पुत्र उत्पन्न भी हो गया तो कहिये अब यह किसका होगा ? और आप किसको देंगे, स्त्री को या पुरुष को ? ॥

शङ्का ८–स्वामी जी कहते हैं कि नियोग होनेसे गुप्त व्यभिचार बन्द होगा, सो कहिये तो क्या दुनियां भरकी स्त्रियों ने स्वामीजीको को इकरारनामा लिखदिया है कि नियोग होजाने पर हम व्यभिचार न करेंगीं और क्या जिसकी आदत व्यभिचार की पड़गई है वह क्या कभी बन्द हो सकती है ? सिवाय इन बातों के तुलसीराम जी कुछ बढ़कर कहते हैं कि ब्राह्मण का ब्राह्मण से व क्षत्रिय का क्षत्रियसे नियोग होना चाहिये अन्य का अन्य से नहीं तो अब कहिये कि वह वर कन्या की सम्मति कहां रही ? और तुलसीराम जी अब जाति पर राजी हुए या नहीं ? इसमें सत्य क्या है जाति या नियोग ?

शङ्का ९–स्वामीजीने पृष्ठ ११८ पंक्ति १५ में ऋ० मं० १० सू० १० मन्त्र १० के आखीर का कुछ हिस्सा लिख कर अर्थ किया है कि जब पति सन्तान उत्पत्ति से असमर्थ हो तो अपनी स्त्री को आज्ञा दे कि तू नियोग से सन्तान उत्पन्न कर ले कहिये कि क्या कोई अपनी जिन्दगी में अपनी स्त्री को दूसरा पति करने की आज्ञा दे सकता है ? कभी नहीं (हां शायद समाजी स्वामी जी का लेख पुष्ट करने को आज्ञा भी देते होंगे)

शङ्का १०–क्यों जी स्वामी जी ने यह मन्त्र पूरा क्यों नहीं लिखा क्या उसके पूरा लिखने पर मतलब सिद्ध नहीं होता है ? और अगर ऐसा नहीं है जो जरा द० ति० भा० पृष्ट १५५ में यह मंत्र पूरा देखकर फिर तो इस का अर्थ करिये

शङ्का ११-स्वामी जी ने पृष्ठ ११९ में लिखा है कि पति परदेश गया हो तो ८ वर्ष विद्या को गया हो तो ६ वर्ष, धनादि को गया हो तो ३ वर्ष बाद देखे पश्चात् नियोग कराके सन्तान उत्पत्ति करले कहिये तो इतनी लम्बी चौड़ी म्याद क्यों दी गई ? शायद इस दरम्यान में वह स्त्री मर गई तो फिर वह कुल वे कलंक ही बच जावेगा और फिर स्वामी जी ने यह भी लिखा है कि पति के आ जाने पर नियुक्त पति छूट जावेगा पर यह तो बतलाइये कि यदि उस के पति ने उसे स्वीकार न किया तो फिर वह स्त्री किसकी होकर रहेगी ॥

शङ्का १२-स्वामी जी ने यह भी लिखा है कि जिस को विवाहसे ८ वर्ष तक गर्भ न रहे अथवा सन्तान होकर मरजावें तो दशवें वर्ष, और पुत्री ही पुत्री हों पुत्र न हों तो ग्यारहवें वर्ष और पति दुःख दायक हो तो उसी समय नियोग करके पुत्र उत्पन्न कर ले। कहिये कि अगर वर्ष पीछे एक लड़की अर्थात् आठ वर्ष में आठ लड़की न हुई तो फिर वह स्त्री नियोग कर सकती है या नहीं और क्या इसी को आप पतिव्रत धर्म कहते हैं कि पति की मौजूदगी में भी स्त्री दूसरा पति कर लेवे और क्या यही वेद का लेख है ? वाह यह वेद क्या हुआ दुनियां भर की स्त्रियों को व्यभिचार कराने की बुनियाद हुई जरा आंख खोलके वाल्मी० रामायण अयोध्याकाण्ड के उस संवाद को भी तो देख लीजिये कि जहां सीता जी से अनुसूया जी ने पतिव्रत धर्म कहे हैं यह तो आप का माना हुआ ग्रन्थ है हां शायद वाल्मीकि जी भी वेद के अर्थ को अच्छी तरह न समझे हों। और स्वामी जी से मूर्ख रहे हों तो बात अलहदा है ॥

शङ्का १३-स्वामी जी ने यह भी कहा है कि वन्ध्या आठवें वर्ष नियोग से सन्तान उत्पन्न करले अब बतलाइये कि अगर उसके सन्तान ही उत्पन्न होती तो वह वन्ध्या क्यों

कहलाती और अब नियोग से उसको क्या फायदा होगा ? और अब यह नियोग सन्तान उत्पत्ति को हुआ ? या व्यभिचार फैलाने को ? और इतने पर अगर आप को स्वामी जी की लकीर पर फकीर ही होना है तो वेहतर है कि पहिले अपनी समाज की विधवा इत्यादिकों को ही दश २ पुत्र उत्पन्न कराइये वेचारी नाहक कामाग्नि से जलती होंगी।

शङ्का १४—भला क्यों जी आप की संस्कार विधि में जो लिखा है कि भात व मांस खाने से गुणी पुत्र उत्पन्न होता है अव वतलाइये तो इस्का कोई प्रमाण भी है या यह वात केवल कपोल कल्पित है और फिर यह भी तो वतलाइये कि भात वा मांस खाने से पुत्र होंगे कन्या तो न होगी और फिर जव भात मांस खाने से ही पुत्रकी उत्पत्ति हो सकती है तब इस बेशरम नियोग की क्यों जरूरत हुई—

शङ्का १५—भात मांस खाने से गुणवान् पुत्र उत्पन्न होने को वतलाया गया है अव यदि पुत्र न होके कन्या उत्पन्न हुई या पुत्र हुआ पर मूर्ख निकल गया या कुछ भी न हुआ तो कहिये इस का कोई जिम्मेदार भी हो सकता है और फिर कहिये तो कि पुत्र न होने की हालत में मांस खाने वाला मनुष्य दोनों दीन से गया या नहीं अर्थात् पुत्र भी न हुआ और हिंसा का भागी वना—

शङ्का १६—मुझे इस वात की शंका है कि अब तो शायद समाज में कोई निरसंतान होगा ही नहीं क्योंकि मांस भात सब को ही मिल सकता है और यदि कोई मिल गया तो फिर इस लेख को कैसा समझना चाहिये ॥

शङ्का १७—आर्योद्देश्य रत्नमाला में परस्त्री, परपुरुष, के संगम को व्यभिचार लिखा है अब कहिये नियोग में और क्या होता है ॥

संन्यास प्रकरण

स॰ प्र॰ पृ॰१२४ से १३५ तक सन्यासी के लक्षण लिखे हैं कि आयु का तीसरा भाग अर्थात् २५ वें वर्ष से ७५ वर्ष तक वानप्रस्थ होकर चौथे भाग में सन्यासी हो जावे जो दुराचार से पृथक् नहीं जिस की शांति नहीं वह सन्यास लेके भी ईश्वर को प्राप्त नहीं होता जो अविद्याके भीतर खेल रहे हैं और अपने को पण्डित मानते हैं वे नीच गति के जाने वाले मूढ़ अन्धे के पीछे अन्धे की दुर्दशा को पहुंचते हैं इत्यादि स॰ प्र॰ को देख लीजिये ॥

शङ्का १–मालूम नहीं इस में कौन२ बातें स्वामी जी पर घटित हो सकती हैं और वे कैसे सन्यासी थे जैसा १–स्वामीजी ७५ वर्ष की उम्र ही पूरी न कर पाये फिर सन्यास कैसा ? २ स्वामी जी में शान्ति क्या थी क्या आप किसी को उत्तर नहीं देते थे या दुर्वाक्य नहीं कहते थे ? देखिये भागवत के वास्ते आप ने क्या २ लिखा है राजा शिवप्रसाद के वास्ते आपने कैसे सुन्दर वाक्य लिखे हैं इसी को शांति कहते हैं ? ३–क्या पण्डिताई का अभिमान भी स्वामी जी में कम था ? देखिये विद्या के घमण्डसे ब्रह्मासे लेकर जैमिनि तक के ग्रंथों में अशुद्धता बतलाते हैं और सबका अर्थ लौट पौट कर दिया ४–क्या स्वामीजी को किसी के निन्दा करने से शोक वा रञ्ज नहीं होता था अगर नहीं होता था फिर प्रत्युत्तर करने की क्या आवश्यकता थी ? ५ क्या स्वामी जी को किसीसे वैर नहीं था ? और नहीं था तो उन पूर्व महात्माओंको दुर्वाक्य क्यों कहे अब कहिये क्या यह ही सन्यासके लक्षण हैं ? और फिर यह भी तो कहिये कि बङ्गलोंमें रहना हलुआ पूरी खाना बूट पहिनना वाद विवाद करना यह किस सन्यासके लक्षण हैं ? सिवाय इसके १३५ में (त्रिविधानि च रत्नानि॰) यह श्लोक मनुस्मृतिके नामसे स्वयं बनाकर लिखा है यह क्यों ?

॥ निराकार प्रकरण ॥

सं० प्र० पृ० १८२ व १८३ में स्वामीजी ईश्वरको निराकार कहते हैं क्योंकि साकार रहने से वह सर्वव्यापक नहीं रह सक्ता और साकार हो तो उसके नाक कान इत्यादि अवयवों का बनाने वाला दूसरा होना चाहिये इत्यादि ।

शङ्का १—क्या आपके नजदीक ईश्वर मनुष्यवत् है ? और सर्वशक्तिमान् नहीं है अगर आप कहैं कि नहीं तो फिर जो स० प्र० के पहिले १०० नामोंकी उस के गुणोंके साथ व्याख्या की है यह क्यों ? अगर सर्वशक्तिमान् है तो फिर उस को निराकार से साकार होने में क्या कोई रोक सकता है ? और फिर जो आप ईश्वर प्रकरण पृ० १८१ में ईश्वरको न्यायी व दयालु कह आये हैं यह निराकार में कैसे घट सक्ते हैं ॥

शङ्का २—फिर जो स० प्र० पृ० २०४ पंक्ति २२ में लिखा है कि धर्मात्मा योगी महर्षि लोग जब २ जिस २ अर्थको जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए तब परमात्मा ने अभीष्ट मन्त्रोंके अर्थ जनाये अब आप ही कहिये कि वह स्वरूप कैसा है जिसमें वह समाधिस्थ होते क्या निराकार भी कोई स्वरूप है ? इसके उत्तर में एक समाजी महाशय कहते हैं कि जो तुमको भूख प्यास लगती है उसका स्वरूप तुम हम को बतलादो तो ईश्वर का स्वरूप हम बतलादें कहिये क्या यह उत्तर यथार्थ है ? और अगर है तो हमारा फिर प्रश्न है कि क्या आप के नजदीक हमारी भूख व ईश्वर बराबर हुआ ? अगर इस पर भी आप बराबर कहें तो हम उत्तर देते हैं कि जब भूख लगती है तब हम रोटियों में ध्यानावस्थित होते हैं और उसी से हमारी भूख की शान्ति होती है अगर तुम रोटी न जानते हो तो हम बतला देवें इसी तरह जिस स्वरूपमें ईश्वरके वह ध्यानावस्थित होते थे, उस परमेश्वरके स्वरूपको तुम बतलाओ ।

शङ्का ३–फिर पञ्चमहायज्ञ के पृ० ११४ पंक्ति ९ में स्वामी जी ने यह लिखा है कि मन से उस परमेश्वर की परिक्रमा करे कहिये तो कि जब वह निराकार और सर्वव्यापी है तब यह परिक्रमा कैसी व कहां से होगी ? ॥

शंका ४–वेदप्रकाश अ० भा० ८ सं० १९५६ के अंकमें आपके पण्डित तुलसीराम जी खुद श्रीमान् पण्डित ज्वालाप्रसाद के दयानन्द तिमिर भा० में लिखे वमूजिव ईश्वरके दो स्वरूप एक मूर्तिमान् व एक अमूर्तिमान् मानते हैं कहिये अब तो निराकार साकार में कोई झगड़ा नहीं रहा अगर आप कहें कि पण्डित तुलसीराम जी ने लिखा है कि इसका यह तात्पर्य नहीं है कि ईश्वर स्वतः दो स्वरूप का है वल्कि वह दो स्वरूप का मालिक है तो हम पूछते हैं कि आप ने जो दो स्वरूप माने वह तो श्लोकके अर्थसे निकले अब यह तात्पर्य स्वतः कहांसे आये और क्या ऐसा तात्पर्य निकलना आपका ठीक हो सकता है ? कभी नहीं क्योंकि वेदको साफ कहने में कुछ भय न था जो तात्पर्य निकलनेकी नौबत बाकी रक्खी।

शङ्का ५–फिर आपके स्वामी तुलसीराम जीने अपने भा० प्र० में लिखा है कि परिक्रमा शब्दका अर्थ आस पास घूमना नहीं किन्तु उसका यह अर्थ है कि पूर्व पश्चिम इत्यादि जहां जावै वहां परमेश्वरको पावे अब कहिये कि जब परमेश्वर सर्वव्यापी है तब इतनी दूर पूर्व पश्चिम उत्तर दक्खिन जाने की आवश्यक्ता ही क्या है क्या जहां हम बैठे हैं वहां या जिन पैरों से हम जांयगे उस में या जिन नेत्रों से हम देखते हैं उसमें परमेश्वर नहीं है–और (पावै) यह शब्द तो सिर्फ साकारमें ही घटित हो सकता है न कि निराकार में–

अवतार प्रकरण ॥

स० प्र० पृष्ठ १९० पंक्ति २७ में स्वामीजी (अजैकपाद) और थोड़ा सा यजुर्वेद के नाम से लिखकर कहते हैं कि ई·

श्वर जन्म नहीं लेता और फिर पृष्ठ १९१ में युक्ति से भी ई-श्वरका अवतार नहीं वतलाते, इसके सिवाय और कोई प्रमाण नहीं और इस अवतारके सिद्ध करनेमें श्रीमान् पण्डित ज्वालाप्रसाद जी ने नीचे लिखे अनुसार प्रमाण दिये हैं।

वेदान्त १ सूत्र ऋ० के ७ मंत्र अथर्व० २ मंत्र यजु० के ४ मंत्र भगवद्गीताके २ श्लोक सामवेदके ४ मंत्र वाल्मीकीय रामायण के २ श्लोक व निरुक्त का १ मन्त्र—

शंका १—अब कहिये स्वामी जी के उतने लेख को सत्य कहोगे या आठ ग्रंथों के प्रमाण को अब अगर आप कहें कि पण्डित जी ने जो अर्थ किया है वह ठीक नहीं इसका अर्थ तुलसीराम स्वामी ने किया है वह सही है और उससे अवतार सिद्ध नहीं होते सो अव्वल तो इन दोनों महाशयों के अर्थ देखने से ही विदित हो जाता है कि किस का अर्थ यथार्थ है व किसके अर्थ में चालाकी व खींच है इस पर हम फिर भी कहते हैं कि अगर पण्डित जी के प्रमाण ठीक नहीं थे तो आपके स्वामी जीने सम्पूर्ण प्रमाणोंके अर्थ क्यों नहीं बदले (देखोअपना वेदप्रकाशअङ्क मास ९ अश्विन संवत् ९५६)किजिसमें शा० ३—२—व १६ का अर्थ आपने कुछ माना व कुछ वदला ऋ० मं० ६ अ० ४ सू० ४२ में आपने हाथ डाला फिर ऋ० मं० १ अ० २१ सू० १५४ मंत्र २ का आपने अर्थ बदला फिर अथर्व का १० अध्याय ४ मं० २७ का आपने अर्थ किया सा० सा० उत्तरार्चिके अ० २ खण्ड १ सूत्र ३ का अर्थ किया ॥

फिर ऋ० मं० ४ सू० ४० अ० १ मं० ९ का अर्थ किया फिर बीचमें कुछ थोड़ा सा छोड़ के गीताके अध्याय ४ श्लोक ६ का अर्थ किया फिर य० अ० ५ मंत्र ३३ का अर्थ किया फिर गीता का एक श्लोक व वा० रा० के श्लोक छोड़कर नि० अ० ४ पा० १ खण्ड ६ का अर्थ किया अब कहिये तो कि बीच २ के

मंत्रको क्यों छोड़ते गये क्या इनमें भूंडमच हाथ पांव हिला-ने की गुंजायश नहीं मिली और अगर आप कहैं कि ये सा-धारण मंत्र थे इससे अर्थ नहीं किया तो ज़रा द० ति० भा० पृ० १८१ से १८६ तक आंख खोलकर देख लीजिये कि यह सा-धारण मंत्र नहीं है बल्कि इनसे साफ़ २ अवतार सिद्ध होता है अब कहो इन मन्त्रोंका कि जिनसे पण्डित जी ने बिलकुल अव-तार सिद्ध किये हैं तुलसीराम स्वामीका छोड़ देना यह कहता है या नहीं कि इनको स्वामी तुलसीराम जी ने मान लिया या यह कि इनमें हाथ पांव चलानेकी गुंजायश नहीं मिली और कहिये इसमें तुलसीराम जी की विद्याका भी परिचय होता है या नहीं ? और इससे यह भी ध्वनि निकलती है या नहीं कि तुलसीराम जीने सिर्फ खण्डनका नाम मात्र किया है या नहीं जिससे समाजियोंमें प्रतिष्ठा बनी रहे ॥

शङ्का २—फिर वेदप्रकाशके अङ्कमें जो पण्डित तुलसीराम जी ने अर्थ किये हैं ज़रा उनको भी देखिये, कि प्रथम उनमें से बहुत कुछ मंत्रोंमें सायणाचार्यके भाष्यकी नकल करके फिर आपने अपना भाषा अर्थ लिखा है, और भी कहा है कि स-नातन धर्म वाले इसे देखें, परन्तु फिर इसी वेदप्रकाश पृ० १६९ पंक्ति १७ में एक मंत्र का अर्थ कर के लिखा है सायणाचार्य ने इसे त्रिविक्रम अवतार पर लगाया है वह हम नहीं मानते क्यों जी यह क्या बात है ? कि एक जगह जिसके अर्थ पर ज़ोर देना दूसरी जगह उसी के अर्थ को क-हदेना कि हम नहीं मानते क्या निष्पक्षता इसी को कहते हैं ? और क्या ऐसा लिखने से यह साबित नहीं होता कि आप अपने मतलब की बात को ही वेदानुकूल कहते हैं ॥

शंका ३—फिर अथर्व १० । ४ । २७ । का अर्थ जो आपने इसी अङ्कके पृष्ठ १६६ में किया है कि तू कभी स्त्री है कभी पु-रुष होजाता है कभी लड़की कभी लड़का बनता, है कभी

बूढ़ा होकर लकड़ीके सहारे चलता है क्योंकि तू विश्वतोमुख अर्थात् सब की ओर मुख फेरता, और जन्म लेता है, इस प्रकार अक्षरार्थसे किसी राम कृष्णादि विशेष जीवका वर्णन नहीं, किन्तु प्रत्येक जीव स्त्री पुरुष की योनियों में घूमता है इत्यादि कहिये अब इस अर्थ का असली मतलब क्या है अगर आप कहें कि वह सर्वव्यापी है इससे लिखा है तो हम कहते हैं कि वह एक दिन का सर्वव्यापी तो नहीं है, किन्तु सदैव सर्वव्यापी है, फिर यह क्यों कहा कि तू कभी स्त्री कभी पुरुष होता है, क्या जब वह पुरुष होता है तब स्त्री से निकल जाता है? या स्त्री होने पर पुरुष से निकल जाता है? और अगर नहीं निकलता तो फिर कभी होता है यह कैसा? फिर आपने कहा कि योनियों में घूमता है तो बतलाइये कि जब वह सर्वव्यापी है तो यह घूमना कैसा? क्या जहां वह घूमने गया था वहां वह नहीं था? और था तो यह घूमना क्यों लिखा, फिर आप कहते हैं कि जन्म लेता है तो अब बतलाओ कि उस सर्वव्यापी परमेश्वर का जन्म लेना कैसा? क्या जिस जीवका जन्म होता है उसमें वह नहीं है (जरा अपने स्वामी जी ही के लेख स० प्र० पृ० १९१ में तो देखिये कि जहां उन्होंने साफ ही लिखा है कि क्या वह गर्भ में नहीं था? जो कहीं से आया, और बाहर नहीं था जो भीतर से निकला,) इस आपके अर्थ से तो साफ ही यह बात निकलती है कि ईश्वर जन्म लेता है, फिर इस सही बात के मिटाने से आप को क्या लाभ है? अब भी तो अपने किये हुए अर्थ से ही कुछ शरम को जगह दीजिये ॥

सर्वशक्तिमान् प्रकरण।

स० प्र० पृ० १८२ पंक्ति १३ में स्वामी जी कहते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है परन्तु जैसा तुम सर्वशक्तिमान् का अर्थ कहते हो वैसा नहीं किंतु सर्वशक्तिमान् का अर्थ यही है कि उत्प-

त्ति पालन प्रलयादि में और सर्व जीवों के पुण्य पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसीकी सहायता नहीं लेता, अर्थात् अपने अनन्त सामर्थ्यसे सब पूर्ण करता है फिर पंक्ति १९ में लिखा है कि अगर तुम कहो कि वह जो चाहता है सब कर सक्ता है तो हम पूंछते हैं कि क्या वह अपनेको मार अनेक ईश्वर बना स्वयं अविद्वान् हो चोरी पाप आदि कर्म कर दुःखी भी हो सक्ता है॥

शङ्का १—कहिये तो कि जब उत्पत्ति पालन प्रलय करने में व पुण्य पापकी व्यवस्था करने में वह किसीकी सहायता नहीं लेता तो अब इससे बढ़के और कौन काम हैं जिसमें उसको सहायता की जरूरत होती है और जिससे उसके नाम पर धब्बा लगाया जाता है॥

शंका २—बतलाओ तो कोई स्वतंत्र को बंधुआ और बंधुआ को स्वतंत्र भी कह सक्ता है? और जो कह सक्ता है तो सिद्ध कीजिये और जो नहीं कह सक्ता तो ईश्वर को सर्वशक्तिमान् कहने में शब्दानुसार अर्थ क्यों नहीं मानते?

शंका ३—स्वामीजी पूंछते हैं कि वह अपनेको मार अनेक ईश्वर बना चोरी आदि पाप कर्म कर दुःखी भी हो सक्ता है? क्यों साहिब सच तो कहो, कि चोरी करना, आत्म घात करना, असमर्थों का काम है या समर्थों का? अगर आप कहें कि असमर्थों का तो क्या ईश्वर असमर्थ है? और है तो फिर सर्वशक्तिमान् कैसा? अगर आप कहें कि समर्थों का तो आप की समाज में भी तो बहुत समर्थ हैं और स्वयं स्वामी जी भी तो समर्थ थे? जिन्होंने वेद तक का अर्थ लौट दिया क्या यह सब चोर ही चोर व आत्मघातक थे?—

शंका ४—कहिये यहां स्वामी जी की कितनी बड़ी भूल है कि जो सर्वशक्तिमान् लिखकर फिर उसकी शक्तिको घटाया अगर इसके बदले अर्धशक्तिमान् कह देते तो क्या हर्ज था?

या उसके कामों का पूरा २ हिसाब लगाकर उसी हिसाबसे सर्वकी जगह ½ या ⅓ या ¼ शक्तिमान् लिख देते-कि फिर ऐसा लिखने की जरूरत न रहती—इस पर अगर आप फिर कहें कि उसके कामों का कोई पार नहीं पा सक्ता, यह हिसाब नहीं लगा सक्ता तो कहिये स्वामीजी ने किस भरोसे व किस आधार से उसके सर्वशक्तिमान् होने में संदेह किया है,

शङ्का ५—क्यों जी क्या कोई मूर्ख होने की इच्छा करता है? या करैगा? और अपने को मारना चाहेगा? जो स्वामी जी ने ईश्वर पर यह बात लिखी।

शङ्का ६—आप तो ईश्वर को निराकार कहते हैं फिर जिस का आकार ही नहीं है—उसके वास्ते स्वामी जी ने यह लिखा कि वह अपने को मार अनेक ईश्वर बना स्वयं चोरी इत्यादि कर दुःखी होसक्ता है? क्या बगैर हाथ पांवके कोई चोरी कर सक्ता है? और क्या ऐसा लिखनेसे यह नहीं पाया जाता कि स्वामीजी को भी ईश्वरके हाथ पांव होनेका संदेह है।

अघनाशन प्रकरण।

स०प्र०पृ०१८२ पंक्ति ३० का सारांश यह है कि ईश्वर अपना नियम छोड़ स्तुति प्रार्थना करने वालों का पाप नहीं छुड़ाता स्तुति प्रार्थना का फल अन्य है—अर्थात् स्तुति से ईश्वर में प्रीति उसके गुण कर्म स्वभाव का सुधरना, प्रार्थनासे निरभिमानता उत्साह सहाय का मिलना उपासना से परब्रह्म का मेल, और उसका साक्षात्कार होना, फिर पृ० १८३ में जो भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता है और नोट—अब उसकी सर्वशक्तिमत्ताके अगर पूरे २ प्रमाण वेद इत्यादि के देखने हैं. तो द० ति० भा० पृ० १८८ से १९४ तक देख लीजिये॥

अपने चरित्र नहीं सुधारता उसका स्तुति करना वृथा है- फिर पृ॰ १८६ पंक्ति १३ में है कि ऐसी प्रार्थना कभी न करना चाहिये और न ईश्वर उसे स्वीकार करता है कि हे परमेश्वर! आप मेरे शत्रुओं का नाश करें, मुझ को सब से बड़ा करें, इत्यादि फिर पंक्ति १९ में लिखा है कि ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते २ कोई ऐसा भी कहेगा कि हे परमेश्वर आप हमारी रोटी बना दें—मकान में झाड़ू लगादें, वस्त्र धोदें, इस प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे आलसी हो बैठे रहते हैं वह महामूर्ख हैं फिर पृष्ठ १८२ का सार यह है कि ईश्वर अपने भक्तों का पाप क्षमा क्यों नहीं करता पाप क्षय की बात सुनते ही उन को पाप करने में निर्भयता और उत्साह होगा (कहिये तो क्या इसी के वास्ते स्वामीजीने सर्वशक्तिमान् नाम मिटाया है) ॥

शङ्का १—बतलाओ कि जब परमेश्वर पाप क्षमाही नहीं करता तब उसके भजनेसे क्या लाभ है और यह सन्ध्या इत्यादि करनेकी शिक्षा क्यों दी जाती है? अगर आप कहें कि गुण, कर्म स्वभाव सुधारनेको तो बतलाइये कि इस संध्या में इन के सुधारने की क्या शिक्षा है और फिर ५ मिनट में क्या स्वभाव सुधर सकता है और ईश्वरके गुणकर्म स्वभाव कहां रहते हैं? ॥

शङ्का २—स्वामी जी ने स॰ प्र॰ १८८ में सगुण निर्गुण उपासनाका भेद बतलाकर कहा है कि परमेश्वरके समीप होने से सब दुःख दोष छूटकर, परमेश्वरके गुणकर्म स्वभावके सदृश जीवात्माके गुणकर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं इस से उपासना अवश्य करनी चाहिये, अब कहिये पाप छूटा या नहीं और यह लेख ऊपर के लेख से विरुद्ध है या नहीं यदि आप कहें नहीं है तो कहिये कि पाप रहते भी कोई पवित्र हो सकता है? इसपर अगर फिर आप कहें कि समीप होने पर

ये दोष छूटेंगे उपासनासे नहीं, तो हम कहते हैं कि जरा स० प्र० पृ० १८७ देखो जहां उपासनाका अर्थ समीपका बतलाया है और कहा है कि अष्टाङ्ग योगसे परमेश्वरके समीपस्थ होने और उसके सर्वव्यापी व सर्वान्तर्यामी रूपसे प्रकट करनेके लिये जो २ करना है सब करना ।

शङ्का ३—क्यों जी पृ० १८८ में कहा है कि परमेश्वरके समीप होनेसे सब गुण दोष दुःख छूट जाते हैं और पृ० १८७ में कहा है कि उसको सर्वव्यापी और सर्वान्तर्यामी रूपसे प्रगट करने को जो २ करना हो सब करना अब बतलाइये तो कि जब वह परमेश्वर निराकार व सर्वव्यापी है तब उसके समीप होना कैसा क्या उसकी कोई खास जगह है जहां जौन से उसके समीप हो सक्ते हैं और क्या समीप जाने वाले में वह नहीं है ? अगर है तो बतलाओ कि यह समीप होना फिर कैसा है फिर यह भी तो कहो कि उसका वह सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामी रूप कैसा व कहां है जिसके प्रकट करने को स्वामी जी ने कहा है अगर आप कहें कि सब जगह व सब में है तो फिर प्रकट करनेको सब करना यह क्या ? क्या वह प्रकट भी हो सकता है ? और अगर हो सकता है तो साकार होकर या निराकारसे, तो फिर उस निराकारका रूप कैसा है जिसको स्वामीजी प्रकट कराते हैं अगर कहो कि निराकार का कोई स्वरूप नहीं है तो फिर इतना लम्बा चौड़ा लेख क्यों ?

शङ्का ४—स्वामी जी ने लिखा है कि ईश्वरके गुण कर्म स्वभावके सदृश अपने गुण कर्म स्वभावको सुधारना, अब बतलाओ कि जब ईश्वर निराकार है तब उसके गुण कर्म स्वभाव कैसे हैं और जब कि वह खुद निर्गुण है उसके कौनसे गुणसे आदमी अपने गुणको सुधारे अब अगर आप कहें कि क्या निर्गुण नाम होनेसे उसके गुण कहीं चले जाते हैं तो बस सही

उत्तर निराकार का है कि निराकार नाम होनेसे भी उसका आकार कहीं भाग नहीं जाता अब रहा कर्म तो उसका एक ये भी कर्म है कि संसारको उत्पन्न करता है पालन करता है और समय पर नष्ट करता है अब कहिये क्या आप भी ऐसा कर सकते हैं ? अगर नहीं कर सक्के तो यह लिखना कैसा ?

अगर इसीकी एवज रामचन्द्रजीके गुण कर्म स्वभाव बतलाये जाते जिन को आप श्रेष्ठ पुरुष मानते हैं और जिन के गुण कर्म स्वभाव सभी उत्तम थे तो क्या हर्ज था ? पर यह यथार्थ बात क्यों लिखी जायगी क्योंकि इस नामसे तो आप की खास दुश्मनी है।

शङ्का ५—जब ईश्वर जो सबमें श्रेष्ठ है स्वामी जीके लेखानुसार स्तुति प्रार्थनासे पाप दूर नहीं कर सक्का तो अब कहिये और कौनसे शुभ कर्म हैं जिनके करने से आदमी दुःख सो छूटे और जब कि श्रेष्ठ कर्म करनेसे श्रेष्ठ फल व बुरा कर्म करने से बुरा फल प्राप्त होता है तो फिर उस पवित्रात्माके स्मरण उपासना ध्यान करने वाले क्यों पवित्र न होंगे और जब उसकी स्तुति करनेसे हमारे गुण कर्म स्वभाव सुधर सक्के हैं तो फिर पाप क्यों न छूटेंगे (बराबर छूटेंगे) यदि इतने पर आप कहें कि ऐसा लेख कहीं नहीं है (तो देखो यजुर्वेद अ० ३६ मंत्र २३ में जिसमें शत्रु निवृत्ति व अपनी उन्नतिकी प्रार्थना है) फिर देखो य० अ० ३ मं० १७ फिर देखो साम० प्र० १ खं० २ मं० १ फिर देखो साम० प्र० १ अ० ३ मं० ४ फिर देखो साम प्र० १ अ० १ खं० ४ मंत्र ९ फिर देखो यजुर्वेद अ० ४० मंत्र १६ और यह मंत्र अगर आपको नहीं मिलते हैं तो हालमें द० ति० भा० पृ० १९४ से २०४ तक ही देखकर अपना कलेजा ठण्डा कर लीजिये और फिर इतने देखने की अटक क्या है ? जरा अपना स० प्र० पृ० १८५ पं० २१ ही देख लीजिये कि जहां स्वामीजीका यह लेख है कि हे सुखके दाता प्र-

काशरूप सब जानने हारे परमात्मा-आप हमको श्रेष्ठ मार्ग से सम्पूर्ण ज्ञानोंको प्राप्त कराइये और जो हममें कुटिल पापाचरणरूप मार्ग है उससे पृथक् कीजिये इसी लिये हम लोग नम्रता पूर्वक आपकी स्तुति करते हैं कि आप हमें पवित्र करें अब कहिये जब वह पाप क्षमा ही नहीं कर सकते तो स्वामीजीको इस लेखकी क्या आवश्यकता थी ? सिवाय इसके यह भी कहो कि इस लेखसे पहिले लेख पर धूल पड़ती है या नहीं ? और अब भांड़के समान लेख स्वामीजीके हैं कि जहां जो जी में आया लिख दिया या हमारी स्तुति है॥

भक्ष्याभक्ष्य प्रकरण।

स० प्र० पृ० २५८ पं० १३ में लिखा है कि जो अति उष्ण देश हो तो सब शिखा सहित छेदन करा देना चाहिये क्योंकि सिरमें बाल रहने से उष्णता अधिक होती है और उससे बुद्धि कम हो जाती है और डाढ़ी मूछ रखनेसे भोजन अच्छे प्रकार नहीं होता और उच्छिष्ट भी बालोंमें रहजाता है॥

शङ्का १—क्यों जी कहिये सन्ध्याके वास्ते गायत्री मंत्रसे शिखा बन्धन लिखा है अब वे लोग जिनकी शिखा मुड़वाई जाती है किस चीजमें गांठ लगावें या सन्ध्या छोड़ें॥

शङ्का २—यह भी तो कहिये कि ये शिखा मुड़वानेकी असली ग़रज़ क्या है ? क्या स्वामी जी सबको ही तो स्वामी नहीं बनाना चाहते ? अगर यही अभिप्राय है तो बहुत अच्छाहै डाढ़ी मूछ शिखा कटवाइये जिससे मालूम पड़े कि आज बाप दादों में से किसीका देहांत हो गया है व घरकी फिकर न कीजिये औरतों की कामाग्नि बुझाने के लिये नियोग हो जायगा और वह पुत्र उत्पन्न कर आप का नाम चला लेगी वा अगर दर असल उच्छिष्ट बचाने को है तो कहिये कि डाढ़ी मूछ में तो जूंठन रह सकती है पर चोटी विचारी ने क्या किया है वह क्यों घुटाई जाती है और फिर दांत जो

असली जूठन रहने की जगह है वह क्यों नहीं तुड़वाये जाते हैं क्योंकि डाढ़ी मूंछ के बनिस्वत दांतों में जूंठन ज्यादा रहती है और अगर शायद श्रीमान् पण्डित ज्वालाप्रसाद जी का कहना ही सही हो कि लड़ाई भिड़ाई में अक्सर चोटी पकड़े जाने की दहशत रहती है इस से वह न रहनी चाहिये तो मेरी समझ में लड़ाई की असली बुनियाद जीभ है फिर वही क्यों न तुड़वाई जावे बस ठंटा मिटा।

स० प्र० पृष्ठ २६४ पंक्ति १० में लिखा है कि जिन्हों ने गुड़ चीनी, घृत, दूध, पिसान, साग, फल, फूल, खाया उन्हों ने सब जगत् के हाथ का खाया, और उच्छिष्ट खाया,।

शङ्का १—बतलाइये गुड़ घी, पिसान, इत्यादि खाने से तो जूंठन खाये के बराबर है तो अब क्या खावें? खाली खड़े गेहूं चना या नमक मांस वा स्वामी जी का सिर, क्योंकि और तो सब जूंठन हो चुकी पर यह न मालूम हुआ कि स्वामी जी क्या खाते थे और उन के वास्ते हलुआ पूरी किस चीज़ की बनाई जाती थी?

स० प्र० पृष्ठ २६४ पं० ३ में लिखा है कि आर्यों के घर शूद्र पाकादि सेवा करे फिर इसी पृष्ठ २६४ के पंक्ति २ में है कि शूद्र के पात्र में और उसके घरका पका हुआ अन्न आपत्ति काल के विना न खावे फिर २६८ पंक्ति में है कि ब्राह्मण के हाथ का खाना और चाण्डाल आदि के हाथ का नहीं खाना।

शङ्का १—कहिये एक ही सतरमें यह विरुद्धता क्यों? और जिसके पात्र में इतना दोष है उस को पाकादि सेवा कैसी? और फिर कहते हैं कि जिस ने गुड़ चीनी इत्यादि खाया (जिस के खाये वगैर कोई नहीं रहता) उसने सब जगत् के हाथ का खाया और उच्छिष्ट खाया तो अब कहिये कि जगत् की उच्छिष्ट से शूद्र के पात्र अच्छे ही होंगे फिर यह

मनाई क्यों ? और अब इस ग्रंथ को सत्यार्थप्रकाश कहोगे या पाखण्डप्रकाश ॥

शङ्का २—स० प्र० पृ० २६७ में स्वामी जी ने प्रश्न किया है कि मनुष्य की विष्ठा से चौका क्यों नहीं लगाते और फिर आप ही उत्तर देते हैं कि उस में दुर्गन्ध आती है और गोवर मनुष्य के मल से चिकना होने के कारण शीघ्र नहीं उखड़ता वाह क्या ही उत्तम प्रश्नोत्तर है कदाचित् मनुष्य के मल में यह दुर्गन्ध न होती तो क्या आप उसी से चौका लगवाते ।

स० प्र० पृष्ठ २६६ में है कि राजा का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हो उन को दण्ड देवे और प्राण वियुक्त करदे और उन का मांस फेंकदे या कुत्ता आदि मांसाहारियों को खिलादे अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है ॥

शंका १—कहिये तो क्या मनुष्य या हानि कारक जीव भेड़िया इत्यादि का मांस भी कभी खाया जाता है ? और क्या मनुष्य राक्षस है ? और अगर नहीं खाया जाता तो यह लेख क्यों ? सिवाय इसके जब मनुष्य मनुष्य को खायगा तब हानि कैसे न होगी ?

मन्त्र प्रकरण ।

स० प्र० पृ० २७५ से मन्त्र प्रकरण है और खुलासा यह है कि मंत्र नाम विचार का है अगर कोई कहे कि मंत्र से अग्नि उत्पन्न होती है और यह बात सही है तो मंत्र जपने वाले के हृदय और जीभ को क्यों नहीं जलाती ?

शंका १—कहिये महाभारत को आप मानते हैं या नहीं अगर मानते हो तो देखो अश्वत्थामा ने जो पांडव वंश निर्वंश करने को अस्त्र त्यागन किया था और वह उत्तराके गर्भ

में मारने को प्रविष्ट हुआ था और परीक्षित गर्भ में मर गये बतलाओ यह मंत्र का बल है या विचार का ?

शंका २—जनमेजय के यज्ञ में ब्राह्मणों ने मंत्र से सर्पोंका आवाहन किया था और तक्षक सहित इन्द्र का सिंहासन तक आया था कहिये यह किस का बल है या कह दीजिये कि यह कथा किसी ने मिला दी है।

स० प्र० पृ० २७० में लिखा है कि (ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः) अर्थात् जो ब्राह्मण के मुख से निकला वह साक्षात् परमेश्वर के मुख से निकला।

शंका ३—क्यों जी इस अधूरे वाक्य लिखने की यहां क्या आवश्यकता थी क्या यह विचार की पुष्टतामें तो नहीं है ? और इस से क्या हुआ ? आप ही तो बतलाइये कि यह कहां का मंत्र है ? और दर असल मंत्र है या विचार है।

ज़रा इस पूरे श्लोक को द० नं० ति० भा० पृष्ठ ३०९ में देखो कि यह ज्योतिषके प्रमाण का श्लोक है या विचार है॥

स० प्र० पृ० २७८ में पोप शब्द का अर्थ पहिले लिखा कि छल कपट से दूसरों को ठगने वालों को पोप कहते हैं और फिर वहीं लिखा कि रोमन भाषा में पोप बड़े और पिता को कहते हैं।

शंका १—बतलाओ कि दर असलमें यह शब्द किस भाषा का है और अगर रोमन का है तो स्वामी जी ने जो अर्थ किया वह कहां से और कैसे किया और क्यों ? जिस भाषा का शब्द है उस के अर्थ को न मानके स्वामी जी का किया हुआ अर्थ माना जावे इसी से समझो कि बाबा दयानन्द उलटा अर्थ करते थे॥

स० प्र० पृ० २८१ में लिखा है कि शंकराचार्यने शैवमतखण्डन किया

शंका १—क्यों जी शंकराचार्य महाराज ने शैवमत खण्डन किया या मण्डन ? जरा उन के बनाये हुए स्तोत्रों को देख

कर आप ही तो कहिये कि स्वामी जी ने यह सत्य लिखा है या असत्य और फिर भी इस ग्रंथ को स० प्र० ही कहेंगे ? अब विशेष दिल की तसल्ली करना हो तो द० नं० ति० भा० पृष्ठ ३०९ से ३१६ तक देख लीजिये ॥

स० प्र० पृ० २९६ पंक्ति २० में लिखा है कि जिसके राज्य में बकरी चराने वाला गड़रिया भी रघुवंश काव्य का कर्त्ता हुआ ।

शंका १—कहिये अब भी जाति जन्म से है या विद्या से है ! अगर विद्या से है तो ऐसे विद्वान् को जिस ने रघुवंश बनाया क्यों गड़रिया लिखा क्योंकि प्रथम तो कालिदास गड़रिया थे ही नहीं यह झूंठ लिखा है तिस पर अगर मान भी लेवें कि गड़रिया थे तो फिर वह क्यों आप के नियमानुसार विद्या पढ़ने से ब्राह्मण नहीं हो चुके और इस पर भी स्वामी जी के लेखपर विश्वास करते हो ।

रुद्राक्ष प्रकरण ।

स० प्र० पृ० २९७ में स्वामी जी हंसी की तौर पर कहते हैं कि जिसके कपाल में भस्म व गले में रुद्राक्ष न हो उस को धिक्कार है ।

अब हम पूछते हैं कि कहिये इस में आप का नुकसान क्या है और कहिये संन्यासी क्यों रंगे कपड़े पहिनते हैं ? अगर आप कहें कि यह संन्यास की पहिचान है तो बस इस लिखने की क्या जरूरत थी ? यह भी शिव भक्तों की पहिचान है सिवाय इस के संसार में सब पदार्थों में आकर्षण है सो यह रुद्राक्ष भी शिव की ओर आकर्षण करने की सामग्री है व इस का माहात्म्य है जैसा आप का सत्यार्थ प्रकाश नास्तिकताकी ओर खींचता है पर यह न मालूम हुआ कि संन्यासी होकर चोगा बूट पहिनना किस संन्यास की पहिचान है ?

स० प्र० पृ० ३०१ में स्वामी जी कहते हैं कि रुद्र, शिव विष्णु, गणपति, सूर्य, आदि परमेश्वर के और भगवती सत्य भाषण युक्त वाणी का नाम है ॥

शंका १-क्यों जी जब शिव रुद्र इत्यादि ईश्वर के नाम हैं और सम्पूर्ण पुराणों में इन्हीं नामों की महिमा वर्णनकी है तो अब बतलाइये कि उन पुराणों को मिथ्या कहने में कुछ शरम आती है या नहीं ?

नाम माहात्म्य प्रकरण।

स० प्र० पृष्ठ ३०६ पंक्ति २१ में स्वामी जी कहते हैं कि नाम स्मरण मात्र से कुछ फल नहीं होता जैसे मिश्री २ कहने से मुख मीठा नहीं होता व नीम २ कहनेसे कड़ुवा, अब इस में आपको नाम का माहात्म्य देखना है तो द० नं० ति० भा० में देखिये जिसमें वेद इत्यादि प्रमाण मौजूद हैं और स्वामी के लेख में जो हमारी शङ्का है उन का समाधान आप कर दीजिये।

शङ्का १-हम कहते हैं कि स्वामी जी का कहना यथार्थ है कि मिश्री २ कहने में मुंह मीठा नहीं होता पर उस के खाने और पीने से तो अवश्य ही होता है इसी तरह नाम स्मरण से कोई फल नहीं, पर उसके खाने और पीने से तो आपके दिये हुए दृष्टान्त अनुसार अवश्यही होगा अब कृपाकर उस नामके खाने और पीनेकी तरकीब और बतला दीजिये अगर आप कहें कि नाम नहीं खाया जाता तो फिर ऐसा विरुद्ध दृष्टान्त क्यों और बतलाओ कि अब ऐसे दृष्टान्त सिर्फ लोगोंको भुलानेकी गरजसे हैं या और कुछ ? और फिर भी इसका नाम सत्यार्थप्रकाश है।

शंका २-क्या स्वामी ने महाभारतके पढ़ने में आंख बन्द की थी ? अगर आप कहें कि नहीं तो क्या उनको द्रौपदीके चीर बढ़ने की कथासे व जब दुर्वासा जी पाण्डवोंके छलनेको

अपने शिष्यों समेत वन में गये थे उस के पढ़ने से नाम का माहात्म्य मालूम नहीं हुआ ? क्यों । क्या द्रौपदी जी इतने कपड़े पहिने थीं जो दुःशासन खींचते २ हारगया और द्रौपदी जी का कपड़ा न पूरा हो पाया व दुर्वासा जो बिना भोजन ही शिष्यों समेत तृप्त हो गये थे कहिये क्या यह नाम का माहात्म्य है या सत्यार्थप्रकाशका है ? वस अब कह दीजिये कि यह भी कथा किसीने मिला दी है ॥

शङ्का ३—क्यों जी मिश्रीका जो स्वामीजीने दृष्टान्त दिया सो तो ठीक है पर यह तो कहिये कि मिश्री नाम लेनेसे उस के मीठेपनका आप के जी पर कुछ असर आ जाता है या नहीं ? और अगर आजाता है तो फिर कहिये परमेश्वर का नाम लेनेसे उसका असर हमारे दिल पर कैसे न होगा ?

शङ्का ४—क्यों जी जब ईश्वर सर्वव्यापी है तो क्या वह नहीं जान सक्ता है ? कि यह मेरा नाम स्मरण कर रहा है और अगर वह नहीं जानता तो फिर वह कैसा सर्वव्यापी ? अगर कहो वह जानता है तो जब कि साधारण मनुष्यकी सेवा से मनुष्य को फल मिल सकता है तो फिर ईश्वर से क्यों न मिलेगा ? और आप भी तो जो कुछ करते हैं उसीके जताने को करते हैं फिर ऐसा लेख क्यों ? ॥

शङ्का ५—स्वामीजी के लेखानुसार नीम नीम कहने से न मुंह कडुवा होता है न मिश्री २ कहनेसे मीठा (अर्थात् ईश्वर का नाम लेना व्यर्थ है) तो अब कृपा कर बतलाइये कि ईश्वर भजनका दूसरा रास्ता क्या है यदि इस पर आप कहैं कि सन्ध्यावन्दन पञ्च महायज्ञ इत्यादि करना या अतिथि सत्कार करना तो इस पर मैं फिर पूछता हूं कि यह सब काम किसकी प्रसन्नता के लिये करना चाहिये इस पर यदि फिर आप कहें कि इस से परमेश्वर प्रसन्न होता है तो मैं फिर कहता हूं कि नाम भी तो उसीकी प्रसन्नता को लिया जाता

है और फिर जब आपके मतानुसार वह हमारे अपराध क्षमा ही नहीं करसक्ता है तब इन षट् कर्मों से अर्थात् सन्ध्या वन्दन इत्यादि करके उस के प्रसन्न रखने से हमको लाभ ही क्या है—

शङ्का ६—भला क्यों साहिब आप के पञ्चमहायज्ञविधि में लिखा है कि गूलर आदि वनस्पतिसे बने उखरी मूसल को नमस्कार करे और उन के पास एक ग्रास रक्खे यह क्यों क्या वह उखरी मूसल खाते हैं ? और यदि नहीं खाते तो फिर यह ग्रास क्यों रक्खा जाता है और जब इन उखली मूसल के समीप (जिन का कुछ भी संस्कार नहीं होता) आप ग्रास रखते हैं तब परमेश्वरकी मूर्त्तिके साम्हने हमको नैवेद्य रखने से क्यों रंज मनाते हैं और फिर यह भी तो कहिये यह बात किस वेद मन्त्रके आधार पर की जाती है ।

मूर्त्तिपूजा प्रकरण ॥

स० प्र० पृ० ३०३ से ३१८ तक स्वामी जी का लेख मूर्त्ति पूजाके विरुद्ध है ।

शङ्का १—क्यों साहिब वेदमें कहीं ऐसा भी लिखा है कि मूर्ति पूजा मत करो या यह सिर्फ स्वामी जी के उन्हीं मन्त्रों पर ध्यान है ? जो उन्हों ने पृष्ठ ३०९ में लिखा है, अगर आप कहें कि क्या वह वेदमन्त्र नहीं है तो हम कहते हैं कि वेद के हैं पर वह स्वामी जी का लेख ठीक नहीं किन्तु सम्पूर्ण असङ्गति से भरा हुआ है अगर आपको देखना है तो दया० ति० भा० पृष्ठ ३३६ को देखलो और तिस पर भी उस मन्त्र में मूर्तिपूजा की मनाई नहीं है ।

शङ्का २—स्वामी जी ने लिखा है कि जब ईश्वर निराकार सर्वव्यापी है तब उसकी मूर्त्ति नहीं हो सकती, तो अब बतलाओ कि जब ईश्वर सर्वव्यापी है तो क्या उस मूर्ति में न होगा ? और अगर है तो फिर उसके पूजने में क्या हरज है,

अगर आप कहें कि मूर्त्ति जड़ पदार्थ है तो हम पूछते हैं कि पहिले आपकी संस्कार वि० संवत् ४७ की छपी के पृष्ठ ६८ में जो लिखा है कि तीन कुशा को केशोंमें लगाकर कहै कि हे औषधि तू इस बालककी रक्षा कर हिंसा मत कर दूसरे इसी पृष्ठ में फिर एक मंत्र लिखकर लिखा है कि इस मंत्रसे छुराको देखो, अब कहिये यह क्यों ? शायद कुशा व छुरा जड़ पदार्थ न होंगे वाह! बुद्धिमानी तो इसीको कहते हैं कि ईश्वर जो सर्वव्यापी है उसकी मूर्त्तिमें पूजा मत करो, और कुशा अर्थात् घाससे जीवदान मांगा जावे, क्यों जी क्या कुशा ईश्वरसे बढ़कर है? और यह जीवदान दे सक्ता है ? अगर नहीं दे सक्ता तो फिर उससे जीवदान क्यों मांगा जाता है और अब हमारी मूर्त्तिपूजा अच्छी या आपकी कुशा व छुरा पूजा? और अब मूर्ख हम हैं जो मूर्त्तिमें उस सर्वव्यापी ईश्वर की पूजा करते हैं, या आप हैं जो कुशासे जीवदान मांगते हैं ॥

शङ्का ३—क्यों जी जब मूर्त्तिपूजाकी मनाई है तब आप अपने स्वामीजीकी प्रतिमा क्यों लटकाते हैं अगर आप कहें कि इससे उनका स्मरण होता है तो अब कहिये क्या मूर्त्ति देखने पर हमको ईश्वरका स्मरण न होगा सिवाय इसके स्वामीजी तो मर चुके अब उनकी तसवीरका आदर क्यों किया जाता है? इसका उत्तर आप यही देंगे कि ऐसे महात्मा का आदर करना हमारा मुख्य धर्म है तो अब कहिये कि एक मरे हुए मनुष्यकी तसवीरका सन्मान करना तो मुख्य धर्म हुआ तो फिर उस सर्वव्यापक परमेश्वरकी मूर्त्तिका सन्मान इत्यादि करना क्यों निरर्थक होगा ? ॥

शङ्का ४—स्वामी जी का कहना है कि परमेश्वरकी किसी एक वस्तुमें भावना करना ऐसा है कि जैसा चक्रवर्ती राजा को सब राज्यकी सत्ता छुड़ाकर एक झोपड़ीका स्वामी बनाना क्यों जी ? इस वक्त पृथ्वी पर सम्राट्पञ्चमजार्ज चक्रवर्ती हैं और

जगह २ उनकी तसवीरें हैं अब कहिये तो इन तस्वीरों से महाराजाके राज्यमें क्या कमी हो गई ? और वह अपना राज्य भवन छोड़कर किस झोपड़ीमें पड़े हैं ? ॥

शङ्का ५—स्वामीजी कहते हैं कि हम परमेश्वरकी पूजा करते हैं ऐसा झूंठ क्यों कहते हो, सच कहो कि हम पत्थर की पूजा करते हैं क्यों जी आपने पूजन करते में किसी को पत्थर २ पुकारते सुना है तो बतलाओ और जो नहीं सुना तो ऐसा झूठ क्यों लिखा ? ज़रा पेश्तर आंख खोलके देखिये व कानका मैल निकाल कर सुनिये तो, कि मूर्त्तिके पुजारी मूर्त्तिके साथ कैसा प्रेम और परमेश्वर का कैसा स्मरण करते हैं और जब कि ईश्वर सर्वव्यापी है तो उस पुजारी के प्रेम और स्मरणको क्यों न देखे व सुनेगा ? कहिये तो क्या वह चैतन्य परमात्मा मूर्त्तिमें है या नहीं और यदि है तो फिर पूजने में क्या दोष है ? ॥

शङ्का ६—स्वामी जी कहते हैं कि तुम्हारी भावना झूंठी है सो उनकी समझ में तो ठीक ही है पर यह तो बतलाइये कि सम्राट् पञ्चमजार्ज तो विलायत में हैं फिर हिन्दुस्थानमें क्यों उनके जन्मोत्सव इत्यादिमें उनकी तस्वीर लगाकर लाखों रुपया आतिशबाजी इत्यादिमें फूंके जाते हैं ? और यह ऐड्रेस वगैरह क्यों पढ़े जाते हैं क्या वह सुनने आते हैं? अगर आप कहें कि सुनने न आवें तो कोई हर्ज नहीं हम अपनी राजभक्ति दिखलाते हैं तो अब कहिये कि जब आपका राजभक्ति में इतना भाव है तो फिर ईश्वर भक्ति हमारे दिलसे कैसे हट सकती है और जब सम्राट् पञ्चमजार्ज की तस्वीरके सामने इतना उत्सव किया जाता है तब ईश्वर की मूर्तिके सामने हम क्यों न करें ? अब कहो भावना सच्ची है या झूंठी है ? इतने पर अगर आप कहें कि सम्राट् को तो तार इत्यादि के द्वारा इस उत्सवकी खबर हो जाती है क्या परमेश्वर के

यहां भी कोई तार जा सकता है ? तो हम कह सकते हैं कि जब परमेश्वर सर्वव्यापी है तब उसे तार वगैरह देने की ज़रूरत ही क्या है ?. अब अगर आप कहें कि जब परमेश्वर सर्वव्यापी है तब मूर्त्ति ही क्यों पूजी जाती है ? जिस पहाड़ के पत्थरसे मूर्ति बनती है वह पहाड़ ही क्यों नहीं पूजा जाता ? तो इसके उत्तर में हम यही कहते हैं कि हमने मूर्त्ति ली है और पहाड़ बड़ी चीज है वह आप के पूजने को छोड़ते हैं क्योंकि आप भी तो जड़ पदार्थ छुरा व कुशके पूजक हैं सिवाय इसके अब यह भी तो बतलाओ कि बड़े मूर्ख हम हैं जो मूर्तिको ईश्वर का प्रतिनिधि मानके उससे अपने मनोरथ पूर्ण होने की आशा करते हैं, या आप हैं जो कुशा से जीवदान मांगते हैं ? ज़रा सच तो कहिये क्या कुशा दूसरा परमेश्वर है और वह जीवदान दे सकता है ? अगर नहीं दे सकता तो फिर यह मूर्खता की प्रार्थना क्यों ? इसके बदले अगर यही जीवदान ईश्वरकी मूर्त्तिसे मांगा जावे जो कृपा करके दे भी सकता है तो इसमें आपका क्या हर्ज है ?

शङ्का ७—क्यों जी आपके उपादान कारणसे स्वामीजीके लेखानुसार जैसे से वैसा ही होना चाहिये तो अब बतलाइये कि निराकारसे यह साकार संसार कैसे हुआ ? अब जो आप कहें कि प्रकृतिसे हुआ तो प्रकृति जड़ है कुछ नहीं कर सकती, और अगर कहो कि ईश्वरेच्छासे, तो जब इच्छा हुई तब मन बुद्धि चित्त भी जरूर हुए और जब यह हुए तब ईश्वर साकार हो गया, और जब वह साकार हुआ तब मूर्त्ति भी सिद्ध हो गई इतनेपर अगर फिर भी कहो कि ईश्वर निराकार है और उसको आकाशसे भी सूक्ष्म बतलाते हो तो जब आकार ही कुछ पदार्थ नहीं है तो अब ईश्वर कब कोई पदार्थ हो सकता है ? मानो ईश्वर है ही नहीं यह क्या ही बड़े भूलकी बात है क्योंकि वह चाहें कैसा ही सूक्ष्म से सूक्ष्म

क्यों न हो पर कुछ तो जरूर ही होगा बस यही कुछ होना उसका साकारताके साथ है फिर यह झगड़ा क्यों ? जरा स० पृ० ११ को तो देखो जहां स्वामीजीने लिखा है कि सब जगत्के बनानेने उस परमेश्वरका नाम ब्रह्मा है तो अब सोचने की बात है कि जब वह बनानेके वास्ते बैठा होगा तो कुछ हाथ पांव इत्यादि भी उनके जरूर होंगे, नहीं तो बनाया कैसे होगा ? और यह हाथ इत्यादिका होना उसकी साकारताको सिद्ध करता है अगर फिर कहो कि सिर्फ उसकी इच्छा मात्रसे सब जगत् उत्पन्न हुआ है तो प्रथम स्वामीजीको यह बनानेका शब्द न लिखना था और न फिर परमेश्वरका नाम ब्रह्मा हो सकता है क्योंकि जगत्के बनानेसे उसका नाम ब्रह्मा हुआ है सो अब संसार उसकी इच्छासे हुआ, फिर ब्रह्मा नाम कैसा ? दूसरे इच्छामें हमारा फिर वही कहना है फिर जब इच्छा हुई तब उसके मन, बुद्धि, चित्त, जरूर होंगे फिर यदि कहो कि वह सर्वशक्तिमान् है मन, बुद्धि न हो तो भी सब कर सकता है तो बस झगड़ा मिटा जब वह सर्वशक्तिमान् है तब उसको अवतार लेने से भी कोई नहीं रोक सकता, इतने पर अगर कहो कि साकार है तो निराकार नाम क्यों रक्खा तो इसका उत्तर हम यह देते हैं कि वह साकार है परन्तु अलख भी नाम उसीका है और जब वह अलख से बाहर है तब उसका कोई आकार नहीं बतला सकता इसीसे निराकार कहते हैं, जैसा इस जीवका हाल है कि यह जीव जरूर कुछ है जिससे यह शरीर चैतन्य रहता है परन्तु अलख होनेके सबब कोई उसका स्वरूप नहीं बतला सकता।

शङ्का ८—स्वामी जी कहते हैं कि जब वह मूर्त्ति सामने न होगी तो परमेश्वरके स्मरण न होनेसे मनुष्य एकान्त पाकर चोरी इत्यादि कुकर्म करनेमें प्रवृत्त होंगे अब पहिले तो यह कहिये कि इस लेखसे यह बात सिद्ध हो चुकी या नहीं ?

कि मूर्तिके सामने हमको ईश्वरका ही स्मरण होता है तभी तो सामने न होने से चोरी इत्यादि करेंगे और अत्र स्वामी जी का यह लेख जो उन्होंने लिखा है कि ऐसा कहो कि हम पत्थरकी पूजा करते हैं झूंठा हुआ या नहीं? और फिर भी ऐसे आदमीको जो अपने ही लेखसे अपने ही लेखको झूंठा करे क्या सत्यवक्ता कह सकते हैं? कभी नहीं दूसरे क्या कभी आपने किसी मूर्त्ति पूजकसे कभी ऐसाभी सुना है कि ईश्वर सर्व व्यापी नहीं है वह तो खुद ईश्वरको आपसे ज्यादा सर्वव्यापी व सर्व शक्तिमान् मानते हैं ज़रा आंख खोल कर देखो कि जो सहस्रों व करोड़ों मूर्तियोंमें ईश्वरको मानते हैं वह कब किसी जगहको खाली समझ सकते हैं फिर एकान्त कैसा कहिये यह स्वामी जी ने अपनी तरफसे बनावट की या नहीं।

शङ्का ९—स्वामी जी कहते हैं कि पुष्प इत्यादि चढ़ाते हैं वह मूर्खता है अब बतलाओ तो कि जब वह सर्वव्यापी है तब क्या वह आपके दाल भात में न होगा, जरूर होगा, फिर क्या आप उस ईश्वरको भक्षण करते हैं। अब अगर आप कहें कि इसमें भी वही परमेश्वर व्याप्त है सो परमेश्वर में परमेश्वर मिल गया तो बस इसीको पुष्प चढ़ानेका उत्तर समझ लीजिये, कि मूर्ति व्यापक परमेश्वर में पुष्प व्यापक परमेश्वर मिल गया कहिये अब मूर्खता क्या है।

शङ्का १०—स्वामी जी कहते हैं कि अगर मंत्र से परमेश्वर आजाता है तो मूर्ति चैतन्य क्यों नहीं हो जाती और फिर उसी मंत्रसे अपने पुत्रके शरीरमें जीव क्यों नहीं बुला लेते, अब हम कहते हैं कि इस आपकी मूर्खताको कहां तक गिनावें क्या सर्वव्यापी परमात्मा को आप जीव के समान समझते हैं। भाई परमात्मा सर्वत्र है और इसीसे सर्वत्र उसके प्रतिष्ठा की विधि है और जीव सर्वव्यापी नहीं परिच्छिन्न है इससे उसके बुलाने की उन मंत्रोंमें विधि नहीं, और जिससे

अन्तरिक्ष स्थित जीव प्लैनचेट पर आते हैं वह विधि अगर सीखना है तो अमेरिकनों से सीखो कहीं पुत्र जिलानेकी विधि होगी तो अवश्य जीयेगा, पर उस बातसे यह भिन्न है यह सामर्थ्य विशेष है सर्वत्र नहीं हो सकती, सिवाय इसके आप भी तो मंत्रसे सन्ध्याके समय चोटी बांधकर रक्षा करते हैं फिर कहिये उसी मंत्रसे आप ही रक्षा करके यमराजसे अपने पुत्रादिको क्यों नहीं बचा लेते।

शङ्का ११–स्वामी जी कहते हैं मूर्त्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु गहरी खाई है क्यों जी जिस मूर्तिको देखके दूध पीते बच्चेको भी ईश्वर स्मरण होता है और हाथ जोड़ परमेश्वर को यादकर गिर पड़ता है जिस मूर्तिको देख कर बड़े राजे महाराजे ऋषि, मुनि, स्त्री, शूद्रोंसे भी महा नीच पर्यंत एक वार ईश्वरके ध्यानमें मग्न होते हैं, जिस मूर्त्ति के दर्शनों को हर छोटे बड़े सुबह शाम हजार काम छोड़के जाते हैं, और ईश्वर स्मरण करते जिस मूर्त्तिके देखने से ईश्वर की याद में मन प्रसन्न हो जाता है जिस मूर्त्तिके दर्शनोंको लोग सहस्रों कोससे आकर दर्शन कर जन्म सुफल मानते हैं और मार्गभर में सिवाय उस परमेश्वरके स्मरणके और कोई काम नहीं रहता जिस मूर्त्तिके उत्सव इत्यादिमें सहस्रों मनुष्य एकत्र हो कर उस परमेश्वर का स्मरण करते हैं वह तो गहरी खाई हुई अब कहिये जिस निराकार परमेश्वर का शेष शारद, नारद, इत्यादि ध्यान करते २ थके हैं और पार नहीं पाते, जिस निराकार परमेश्वर का ब्रह्मा तक तत्व नहीं पाते जिस निराकार परमेश्वरके जानने को हजारों मुनीश्वर घरवार छोड़ सम्पूर्ण उमर जंगल में गमाने पर भी पार नहीं पाते जिस निराकार परमेश्वरके वास्ते वह वेद भी जिसके बल से स्वामी जी गरजते हैं अन्तको नेति २ अर्थात् यह कहता है कि मैं कुछ नहीं जानता हूं उस समुद्र रूपी निराकार परमेश्वर की उपासना स्वामी जी दूध पीते बच्चे को बतलाकर

संसारका उद्धार करना चाहते हैं कहिये यह कितनी बड़ी मूर्खता है और जब मूर्त्तिकी उपासना एक तरहकी खाई बतलाई गई है तो इसको क्या कहना चाहिये ।

शंका १२—स्वामीजी कहते हैं कि मूर्त्ति पूजासे ज्ञानी होते तो किसीको नहीं देखा किन्तु मूर्ख हुए हैं सो बहुत ही ठीक है और निस्सन्देह मूर्तिपूजासे कोई ज्ञानी नहीं होता बल्कि ज्ञानी तो कुशाकी पूजासे व कुराकी पूजासे होता है तभी तो देखिये आर्यसमाजके छोटे बड़े सभी वेदके जानने वाले हो गये हैं परन्तु हमारे नजदीक ऐसे ज्ञानको सहस्रों धिक्कार हैं कि जहां भंगी तक पितर बनाया जावे, विधवाओंको ग्यारह २ खसम कराये जावें लड़की की तस्वीर गली २ घुमाई जावे, चाहे खूबसूरत विद्वान् नीच भी हो जिसे लड़की पसन्द करे उसी के साथ शादी करदी जावे सम्पूर्ण मनुष्योंके सामने वरका हाथ कन्या की छाती पर धरवाया जावे, ऐसा ज्ञान परमेश्वर कभी सनातनधर्म वालों को न देवे ॥

शंका १३—स्वामी जी कहते हैं कि करोड़ों रुपये खर्च कर के लोग दरिद्री होते हैं कहिये रुपया हमारा खर्च होने से आपकी छाती क्यों फटती है आजतक तो ऐसा कभी नहीं देखा गया; कि एक के पैर में कांटा लगे और दूसरे को दर्द हो, अगर आप कहें कि मित्र को ऐसी हालत में भी दुःख होता है सो हमारी आपकी कोई मित्रता नहीं है इतने पर अगर आप कहें कि तुम्हारा नुकसान हमसे देखा नहीं जाता तो हम कहते हैं कि अपनी आंख बन्द कर लीजिये बस "मूंदेहु आंख कतहु कोउ नाहीं"

शंका १४—स्वामी जी यह कहते हैं कि माननीय माता पिता का मान न करके पत्थर का मान करते हैं सो बहुत सही है पर यह तो कहिये कि स्वामीजीने तो दोनों ही का मान न किया अर्थात् न मूर्तिपूजन किया न माता पिता का मान व सेवा की, कहो अब धोबी का गधा कौन ? और

स्वामीजी किस तरफ के रहे सिवाय इसके क्या आप यह नहीं देखते कि भगवादाराधना करने वाले तो माता पिता की पूरी २ सेवा करते हैं ॥

शंका १५–स्वामी जी स० प्र० पृ० ३१४ के लेखका सारांश यह है कि लोग माता पिता के खाजाने के डरसे मूर्ति के सामने भोग रखदेते हैं क्यों जी क्या भोग लगा हुआ अन्न मा बाप को खाने की मनाई है और क्या अगर उनको खाना होगा तो वह उसे नहीं खा सक्ते, और क्या भोग लगाने वाले के मा बाप भूखों मरे जाते हैं, और फिर यह भी तो कहो, कि मूर्तिपूजक तो मा बाप के डरसे भोग लगाते हैं पर आप भी तो पृथ्वी इत्यादि का भाग निकालते हैं कहिये यह आजाकी दहशतसे या परआजा की, और फिर आपके स्वामी जीको तो कोई मूर्तिका डर न था यह क्यों अपने मा बापको छोड़भागे क्या इसीका नाम मा बापकी सेवा है ?

शङ्का १६–पृ० ३१८ में स्वाजीजी कहते हैं कि रामचन्द्रके समय शिव मन्दिरका चिन्ह भी न था फिर पीछे रामराजा ने लिंग स्थापित कर रामेश्वर नाम रक्खा है और इसके प्रमाणमें वाल्मीकीयरामायणका एक श्लोक दो चार श्लोकों से बनाकर लिखा है कहिये अगर स्वामीजीका कहना सत्य था तो इस श्लोकमें बनावट क्यों कीगई ? अर्थात् दो श्लोकोंके कुछ २ शब्द लेकर एक श्लोक किया गया क्या सत्य कहने वाले भी ऐसी बनावट करते हैं ? और क्या यह श्लोक जैसा स्वामीजीने लिखा है आप वाल्मीकीयरामायणमें बतला सकते हैं और अगर न बतलावें तो अब भी इस स० प्र० को जाल ग्रन्थ कहोगे या नहीं, सिवाय इसके क्या जब स्वामीजी रामायण देखने बैठे थे तब सर्ग ४१ के ४२ व ४३ श्लोकों पर उन की नजर नहीं पड़ी ? जिसमें रावणकी स्थापित की हुई शिव [illegible] बतलायी गयी है ।

शङ्का १७–भला क्यों जी आपके स्वामी तुलसीरामजीने भा० प्र० उत्तरार्धके मूर्त्तिपूजा प्रकरण में लिखा है कि मूर्त्ति

के देखनेसे परमेश्वरका नहीं किन्तु बढ़ईका स्मरण होता है शायद आपके समीप भी यह सही हो अब मैं पूछता हूं कि स्वामी द० न० जीके या अपने किसी बुजुर्गके फोटो देखनेसे उस वक्त आपको स्वामीजी या अपने बुजुर्गका स्मरण होता है या उस फोटो लेने वालेका, और अगर स्वामी जी या बुजुर्ग का होता है तो फिर इस लेखको आप क्या कहेंगे—

तीर्थप्रकरण ।

स० प्र० पृ० ३२४ पंक्ति २ में स्वामीजी पण्डोंकी वहियों का प्रमाण देकर कहते हैं कि यह सब तीर्थ ५०० या १००० वर्ष से इसी तरफके बने हैं ॥

शङ्का १—क्यों साहिब यह पण्डोंकी वहीका प्रमाण क्यों? अब आपका वेद कहां गया ? ॥

शङ्का २—क्या आपके माननीय ग्रन्थ महाभारत व वाल्मीकीय रामायण भी जालग्रन्थ हो गये ? और अगर नहीं हुए तो फिर ज़रा महाभारतको देखिये कि उसमें तीर्थोंका क्या माहात्म्य लिखा है व इसी तरह वाल्मीकीय रामायण पढ़िये, कि वाल्मीकि जी ने क्या लिखा है शायद वह दूसरी गंगा होंगी जो स्वामीजीके डरसे भाग गई हों या सीधा यह कह दीजिये कि यह भी किसी ने मिला दिया है ॥

शङ्का ३—क्यों साहिब क्या पण्डोंकी वहियां वेदके भी पहिलेकी हैं जो वेदोंका प्रमाण न लेकर इन वहियोंका प्रमाण लिया गया अगर अब भी वेद इत्यादिका प्रमाण आपको देखना है तो कृपा कर द० ति० भा० पृ० ३८२ से ३८६ तक देख लीजिये ।

शङ्का ४—क्योंजी जो स्वामीजी ने पहिले स० प्र० पृ० २०४ पंक्ति २५ में लिखा है कि जो तू सत्य ही बोलेगा तो गंगा या कुरुक्षेत्रके प्रायश्चित्तको जाना न पडेगा अब बतलाइये कि वहां क्यों स्वामीजी ने गंगा व कुरुक्षेत्रको पाप निवारक बतलाया और अब क्यों मेटते हैं ? क्या वह कोई

दूसरी गंगा थी जिनकी इस स० प्र० लिखते समय कहीं तबदीली हो गई और अगर नहीं हुई तो अब यह कहना ही होगा कि यह स्वामीजीकी भूल है ।

॥ गुरु प्रकरण ॥

स० प्र० पृ० ३२६ में स्वामीजीका कहना है कि गुरु बड़ी पोप लीला है और गुरु लोभी क्रोधी हो तो अर्घ्य पाद्य अर्थात् ताड़ना दण्ड प्राण हरणमें भी दोष नहीं है ।

शङ्का १-पहिले हम सिर्फ इतना पूछते हैं कि स्वामीजी क्रोधी या लोभी थे या नहीं ? अगर आप कहें कि नहीं तो प्रथम यह कह दीजिये (कि ऐसों का परमेश्वर नाश करे यह मर ही क्यों न गये पांच जूते मारने से हनूमान देवी भाग जाते हैं) यह शब्द क्या क्रोधके नहीं हैं और नहीं हैं तो क्या शान्तिके हैं ? दूसरे जब लोभ नहीं था तो अपनी पुस्तकोंकी रजिस्टरी करना व मन चाही कीमत रखना यह क्यों ? चन्दा लेना क्यों ? अगर आप कहें कि दूसरोंकी भलाईके लिये तो हम पूछतेहैं कि भलाई किसकी हुई ? अगर आप कहैं कि आर्योंकी जिन्होंने उनकी आज्ञा मानी तो हम पूछते हैं कि कहिये स्वामीजी दोषी और पाखण्डी हुए या नहीं और अब उनके दश नियमोंमें का सातवां नियम कहां गया ? (शायद सब यह शब्द सिर्फ आर्योंके वास्ते ही होंगे) और क्या महात्माओंका वेदमें यही धर्म है ? कि एकको मित्र और दूसरेको शत्रु समझें कहिये अब यह अर्घ्य पाद्य किसको ?

शङ्का २-क्या गुरुके वास्ते मनुस्मृति भी जाल ग्रन्थ हो चुकी ? अगर नहीं हुई तो ज़रा आंख खोलके अ० २ श्लोक १९९ से २०५ तक पढ़ लीजिये और फिर आप ही कहिये कि यह स० प्र० ग्रन्थ कैसा है और स्वामीजी अब गुरु निन्दक हुए या नहीं ?

पुराण प्रकरण

स्वामीजी ने स० प्र० पृ० ३२८ से ३३१ तक पुराणोंके विरुद्ध लेख लिखा है ॥

शङ्का १—क्योंजी पुराण तो अठारह हैं पर स्वामी जी ने सिर्फ पांच ही पुराणोंकी विरुद्धताकी है क्या शेष पुराण सही हैं और अगर नहीं हैं तो उन में भी जो २ बातें यथार्थ न थीं वे क्यों लिखी गई' और जब न लिखी गई' तो अब वह सत्य क्यों न समझी जावें ?

शङ्का २—स्वामीजीने जिन पुराणोंपर कृपादृष्टि की है उस मेंसे सिर्फ भागवत बनाने वालेका नाम वोपदेव जयदेव का भाई लिखा है शेष पुराणोंके बनाने वालेका नाम नहीं बतलाया यह क्यों ? क्या उनके बनानें वालोंका पता नहीं लगा? और जब स्वामीजीको पुराण बनाने वालेका ही पता न लग सका तब वह उनको कैसे सत्य असत्य कर सकते हैं?

शङ्का ३—क्यों साहिब इन पुराणोंमें जिन पर स्वामीजी ने हाथ डाला है कुछ इतनी ही कथा नहीं है जिन के निस्वत स्वामीजीने शंका करके पुराणोंको असत्य कहा है बल्कि और बहुतसी कथाएं हैं क्या वे सत्य हैं या नहीं अगर आप कहैं कि एकही कथाके असत्य होने से सम्पूर्ण पुराण असत्य हो सकता है तो हम पूछते हैं कि आपकी सत्यार्थप्र० तो बिलकुल ही असत्यता से भरी है और वहभी ऐसी नहीं बल्कि परस्पर विरुद्ध है, फिर क्यों सत्य समझी जावे अगर आप पूछे कि कहां २ असत्य व एक लेखसे दूसरा लेख विरुद्ध है तो हम कहते हैं कि जरा पक्षपात रहित हो कर हमारी इसी छोटी पुस्तककी आदि से अंत तक देखकर स० प्र० का मिलान कर लीजिये बस आपको खुदही मालूम हो जायगा अब इतने पर अगर हमहीं से पूछें तो लीजिये दो चार मोटी २ बातें आपके नजर करतें हैं मिलान कीजिये प्रथम स्वामीजी ने चारों वेद साङ्गोपाङ्ग पढ़े हुएको ब्रह्मा कहा है आप कहिये कि क्या लेख सत्य है? और अगर सत्य है तो हम वेद पढ़े हुओंकी गिन्ती कराते हैं आप एकसे दूसरा ब्रह्मा साबित कर दीजिये और फिर इतना ही क्यों जब आप स्वामी

जीके लेखानुसार वोपदेवको जयदेवका भाई ही साबित कर दीजिये तो हम भी कहने लगे कि शायद स्वामीजीका लेख सत्य हो अगर हम से पूछते हो तो द० ति० भा०पृष्ठ ४७१ को देख लीजिये और अगर द० ति० भा० में भी शङ्का है तो फिर गीत गोविन्द जो जयदेवका बनाया है देख लीजिये व जयदेवका हाल तारीख फरिस्ता से देखिये।

सिवाय इसके स्वामीजी ने विधवाओं को ११ पति करने की आज्ञा दी है आप अपने यहां की विधवाओं को कराके दिखलाइये तो हम सत्य समझेंगे।

स्वामीजी ने दूध घी खाने पीने वालोंको पितर माना है आप उनके लेखानुसार मानकर दिखलादें तो हम स्वामीजीके लेखको सत्य समझें स्वामीजी ने पहिले कहा कि जो वेद में लिखा है हम उसी को सत्य मानेंगे और फिर तीर्थोंके वास्ते पंडोंकी बहीका प्रमाण दिया क्या इसीका नाम सत्यता है स्वामी जी कहीं अपने लेखमें जाति भेद जन्मसे मानते हैं कहीं विद्या पढ़ने से क्या इसी को आप सत्य कहते हैं इत्यादि २

शङ्का ४-स्वामीजीने स०प्र०पृ० ३३० से कश्यपसे सिंहादि उत्पन्न होने में बड़ा सन्देह करके कहते हैं कि वह अपने मा बापको क्यों न खा गये ? क्योंजी क्या सिंह, बाघ, इत्यादि जन्मते ही अपने मा बापको खाजाते हैं व अगर नहीं खाते तो फिर यह सन्देह क्यों ? और फिर मान लीजिये कि कश्यपसे नहीं हुए तो अब आप बतलाइये कि कहांसे हुए ? अगर आप कहें कि ईश्वरसे तो स्वामीजी ने इसी पृष्ठमें लिखा है कि ईश्वरके सृष्टिक्रमसे विरुद्ध कोई आप नहीं हो सकता तो अब बतलाइये कि शेर उत्पन्न करते समय कौन शेरनी ईश्वर की स्त्री थी तथा हाथी ऊंट पैदा करनेसे पहिले कौन हथिनी या ऊंटनीके साथ ईश्वरने भोग किया था, जिससे वह पैदा हुए और उस वक्त भी ईश्वर निराकार था या साकार? अगर निराकार था तो उस केवीर्य कहां से आया सिवाय उसके वह शेरनी कहां से उत्पन्न हुई थी।

शङ्का ५—क्यों जी स० प्र० पृ० ३२७ में स्वामीजी ने यह आधा श्लोक लिखा है कि (रथेन वायु वेगेन जगाम गोकुलं प्रति) क्या यह श्लोक इसी तरह भागवत में है और आप इसको भागवत में बतला सकते हैं ? अगर बतला सकते हैं तो बतलाओ नहीं तो कबूल करो कि स्वामीजीका लेख असत्य है (चेलोंके गढ़े चौथीबार के सत्यार्थ प्रकाश को हम न मानेंगे जिसमें दो २ अक्षर अलग २ श्लोकोंमेंसे संग्रह किये है)

शङ्का ६—क्यों साहिब पूतना व अजामिलकी कथा वैसी ही है जैसी स्वामीजीने लिखी है और अगर हो तो जरा कृपाकर बतला दीजिये वरना क्यों जबर्दस्ती मनमानी कथा लिखकर लोगोंको धोखा देते हो जरा तो शरमको जगह देओ

ज्योतिष प्रकरण ।

स० प्र० पृ० ३२६ से स्वामीजी फलित ज्योतिषकी निन्दा करते हैं और कहते हैं कि यह सब असत्य है ।

शङ्का १—क्योंजी स्वामीजीने जो नोटिस संस्कृत सन् १८७० ईस्वीमें जिसकी नकल द० न० छ० क० द० पृष्ठ २७ में पण्डित जियालाल जी ने की है इस बातके निस्बत दिया था कि फलानी पुस्तकें मान्य हैं और फलानी अमान्य हैं उन माननीय पुस्तकों में भृगुसंहिता को मान लिया गया है अब कहिये तो कि भृगुसंहिता में सिवाय फलित ज्योतिष के और क्या है? और अब आप किस लेखको सत्य समझते हैं ।

शङ्का २—क्यों जी जब कोई ग्रह कोई फल नहीं कर सकते हैं तो वेद इत्यादि आपके माननीय ग्रन्थोंमें इनकी शांति क्यों लिखी है. अगर आपको वह वेद मंत्र देखना है तो द० न० ति० भा० पृष्ठ० ४०५ से ४०८ तक देख लीजिये ॥)

व्रत प्रकरण ।

स०प्र०पृ० ३४४ में स्वामीजीने व्रतोंका निषेध करके मत-

लव निकाला है कि पुराण वगैरहमें १२ महीना ही व्रत बतलाये हैं अर्थात् कोई दिन व्रतसे खाली नहीं और ३५५ पृ३में लिखा है कि इस व्रतके लिखने वाले निर्दई कसाईको दया न आई ॥

शङ्का १—क्यों जी कहो यह लेख स्वामी जी का सिर्फ लोगोंको धोका देकर अपने समाजी बनानेको है या किसी और अभिप्रायसे ? अगर आप कहें कि दुनियांकी भलाई को है तो बतलाइये कि जिसका जो उपासक होता है उसी का वह व्रत करता है या जैसा स्वामीजी ने लिखा है वैसा करते हैं फिर इस में तकलीफ क्या है ?

शङ्का २—क्यों जी हमारे व्रतोंमें आपको बड़ा दर्द हुआ जो महीना पन्द्रह दिनमें एक या दो उपासना पीछे होते हैं और तिस परभी बहुतसे व्रतोंमें फलाहार करने या दूध पीने की आज्ञा है पर यह तो कहिये कि यज्ञोपवीत संस्कारमें स्वामी जी ने खुद तीन दिन का व्रत लिखा है यह क्यों और क्या इसीका नाम बुद्धिमानी है । और अब क्या स्वामी जी को निर्दय व कसाई कहना अयोग्य होगा।

स० प्रकाश पृष्ट ३१९ में स्वामी जी कहते हैं कि यज्ञोपवीत व शिखा विद्या के चिन्ह हैं ।

शङ्का १—कहिये यहां आप शिखा को विद्याका चिन्ह कहते हैं और पहिले लिखा है कि गर्मदेशमें वालोंको बिलकुल घुटवा देना चाहिये अब बतलाओ कि क्या गर्मदेश वाले विद्वान् सब मूर्खही कहलावेंगे ? क्योंकि उनकी शिखा घुटवाने को पहिले ही आज्ञा हो चुकी है अब अगर आप कहें कि यज्ञोपवीतसे पहिचान होगी तो यज्ञोपवीत सदैव वस्त्रके भीतर रहता है क्या उन विद्वानोंको वस्त्रके ऊपर हाथ में लिये रहना चाहिये ? और कहना चाहिये कि हम विद्वान् हैं हमारा यह चिन्ह है (वाह क्या उत्तम पहिचान है पर विद्या के उपरान्त ये चिन्ह चाहिये)

शङ्का २- क्यों जी पहिले स्वामीजी ने लिखा है कि ब्राह्मण को उपनयन कराके पढ़नेको भेजे, और यहां लिखा कि यज्ञोपवीत विद्याका चिन्ह है कहिये इन दोनों लेखोंमें कुछ अन्तर है या नहीं ? और अब किसको सत्य मानें ॥

शङ्का ३—स्वामी जीने यह नहीं बतलाया कि मनुष्य में कितनी विद्या होनेपर यज्ञोपवीत विद्याका चिन्ह होगा, यदि आप कहें कि पूरी विद्या पर तो बतलाओ कि फिर जो थोड़ा ही पढ़ा होगा उसका क्या चिन्ह होगा ।

शङ्का ४—चोटी भी विद्याका चिन्ह बतलाया गया है अब प्रथम तो यह बतलाइये कि जबतक विद्या न आवे तबतक क्या मनुष्यको बिलकुल घोटमघोट ही रहना चाहिये, और इस शिर घुटाने वालेका सर्द देशमें कोई नुकसान तो न होगा, दूसरे चोटी भी टोपी साफा इत्यादिके भीतर रहती है क्या उनको पहिचानके वास्ते सदैव शिर खुले रहना चाहिये ॥

शंका ५—संन्यासियोंको तो शायद बाल रखनेकी बिलकुलही मनाई है तो अबकहिये चोटी न होनेसे तो वे अवश्यही मूर्ख हुए

स०प्र०पृ० ५८९में स्वामीजी कहते हैं कि आर्यावर्त इस भूमिका नाम इससेहै,कि आदि सृष्टिसे आर्यलोग इस पर रहते हैं ॥

शंका १—क्यों साहिब स्वामी जी पहिले आर्योंका आना तिब्बतसे लिख आये हैं और अब आदि सृष्टिसे आर्योंका रहना यहां बतलाते हैं ? कहिये अब भी स्वामीजीके लेखको असत्य कहोगे या नहीं ? और अब इस सत्यार्थप्रकाश को असत्यार्थप्रकाश कहना क्या अयोग्य होगा ॥

॥ इति ॥



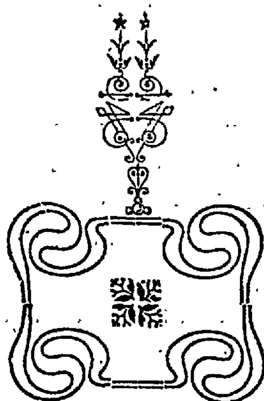
किस्सा गन्धर्वसेन ॥

किसी समय कोई धोबी डाढ़ी मूंछ घुटाये ब्रह्मचारी का वेश बनाये किसी बनियें की दूकान पर गया उस को ऐसा देख बनिये ने पूंछा क्यों भाई यह क्यों। बस इतना सुनते ही धोबी रोने लगा और बोला भाई क्या कहैं गन्धर्वसेन मर गये। बनियां उस को रञ्जीदा देख आप भी रञ्ज करने लगा, और बोला मित्र जब गन्धर्वसेन मर गये तब हम को भी बाल बनवाना चाहिये, धोबी बोला जरूर, बस फिर क्या था बनियें ने तुरन्त ही नाई बुलाकर डाढ़ी मूंछ घुटवा डाली। कुछ देर पीछे राजा का कोई सिपाही किसी कार्य को बनिये की दूकान पर आया और बनिये को ब्रह्मचारी बना देख पूछने लगा क्योंजी यह क्या बात है। यह सुनकर बनियां बोला, मालिक क्या कहैं, गन्धर्वसेन मर गये। बस सिपाही भी दुःखी हो कहने लगा कि अब तो हमको भी बाल बनवाना ही होगा, बनिये ने उत्तर दिया कि जरूर बनवाना चाहिये, इतने में भाग्य से कोई नाई आ गया और सिपाही ने वहीं बैठ बाल साफ करा डाले। इसके कुछ देर पीछे उस सिपाही को वज़ीर साहिबके दरबार में जाने की नौबत पहुंची और बज़ीर साहिब ने भी उसको घोटमघोट देखकर ताज्जुब करके पूछा क्यों रे। यह क्या सिपाही ने रंजीदा होकर कहा "हां हुजूर" क्या अर्ज करूं गन्धर्वसेन मरगये। बस क्या था वजीर साहिब भी रञ्जीदा हो गये, और उसी समय नाई बुलाकर आपने भी सब बाल साफ करा डाले। क़िस्मत से वही दिन दरबार का था जब दरबारमें बजीर साहिब ऐसी हालत से पहुंचे तब उन को देख राजा को बड़ा सन्देह हुआ, और पूंछा क्यों वजीर साहिब यह क्या बात है। बज़ीर साहिब ने उत्तर दिया कि महाराज क्या कहूं गन्धर्वसेन मर गये। बस राजा भी शोक

सागर में डूब गये, और बोले तो अब क्या हम को भी बाल बनवाना चाहिये वज़ीर साहिब ने कहा चाहिये तो ज़रूर, सोही राजा ने भी नाई बुला शिर के बाल घुटवा डाले। कुछ देर बाद महाराज महल के अन्दर गये रानी साहिब में ताज्जुब करके पूछा कि महाराज! यह क्यों। राजा ने उसी तरह रञ्जीदा हो कर कहा रानी साहिब क्या कहें गन्धर्वसेन मरगये। यह सुनकर रानी साहिब ने रोना पीटना शुरू कर दिया और रानी के रोते ही तमाम रनवास में हाहाकार मचगया जब ज़रा देर के पीछे कुछ समाधानी हुई तो रानी ने पूछा कि महाराज गन्धर्वसेन कौन थे। और उनसे अपना क्या सम्बन्ध था, । राजा साहब बोले हम को तो यह कुछ मालूम नहीं वज़ीर को मालूम होगा, फिर क्या था वज़ीर साहिब बुलाये गये, और उन से पूछा गया कि यह गन्धर्वसेन कौन थे। उन्होंने जवाब दिया महाराज हम तो कुछ नहीं जानते सिपाही जानता होगा बस सिपाही तलब हुआ और उसने भी ऐसा ही जवाब दिया और बनिये का नाम लिया, तब बनियें ने आकर धोबी के ऊपर टाला बस चट धोबी तलब हुआ और उससे पूछागया कि क्यों रे! गन्धर्वसेन कौन थे। बस धोबी सुनकर रो उठा और बोला महाराज क्या कहूं गन्धर्व मेरा बड़ा प्यारा था जब उस को भूख लगती थी मेरे पांव से मूंड़ लगा देता था और मेरे पीछे २ फिरता था महाराज क्या कहूं मैं तो मरचुका इतने में फिर किसीने कहा कि अरे भाई! यह तो सब सही है, पर वह था कौन। यह सुनकर धोबी फिर चिल्लाने लगा और बोला महाराज उस की चर्चा से मुझे बड़ा रञ्ज होताहै क्या कहूं मैं मरचुका जबसे वह मरा है मुझे पीठ पर पोटरी धरनी पड़ती है वह मेरा प्यारा गधा था।

॥ इतिसमाप्ति ॥







* पुस्तकोंका सूचीपत्र *

१—ब्राह्मणसर्वस्व मासिक पत्र पिछले भाग प्रति भागका १।) एकसाथ सब भाग लेने पर १०) अष्टादश स्मृति हिन्दी भाषा टीका सहित ३) भगवद्गीता भा० टी० २।।) याज्ञवल्क्य स्मृति सटीक १।) अष्टाध्यायी पाणिनीय सटीक सोदाहरण २) गणरत्नमहोदधि २) ईशोपनिषद् सभाष्य ≡) केनोपनिषद् सभाष्य ≡) प्रश्नोपनिषद् सभाष्य ।।) उपनिषदों का उपदेश १।) सतीधर्म संग्रह ।) पतिव्रतामाहात्म्य ≡)।। भर्तृहरि नीतिशतक भा० टी० ≡) भर्तृहरि वैराग्यशतक ≡) भर्तृहरि शृङ्गारशतक ≡) दर्शपौर्णमासपद्धति १) इष्टिसंग्रह ।।) मानवगृह्यसूत्र ।।) आपस्तम्बगृह्यसूत्र ।) यज्ञपरिभाषा सूत्र संग्रह ।।) पञ्चमहायज्ञविधि =) भोजनविधि)।। सन्ध्योपासनविधि)।। कातीयतर्पणप्रयोग)।। नित्यहवनविधि ।।वेदसारशिवस्तोत्र)। सनातनहिन्दूधर्मव्याख्यानदर्पण ३।=) दयानन्दमत विद्रावण ।) आर्यमत निराकरण प्रश्नावली ।) आश्वमेधिकमन्त्रमीमांसा =) सत्यार्थप्रकाशसमीक्षा =) पञ्चकन्या चरित्र -) विधवाविवाह मीमांसा ।=) मूर्त्तिपूजा मण्डन =) ठनठनबाबू =) दयानन्द की विद्वत्ता)।। नमस्ते मीमांसा)।। सनातनधर्म प्रश्नोत्तरावली)।। प्रेमरत्न -)।। गोरत्न -) भजन विनोद)।। रम्भाशुकसंवाद सचित्र =) पुराण कर्त्तृमीमांसा)।। जैनास्तिकत्वविचार)।। दुनियांकी रीति)। गीतासंग्रह ।=) योगसार ।) कर्त्तामण्डन)। विधवोद्वाह निषेध)। सुमनवाटिका =) रामगीता =) रामहृदय =) आदर्शरमणी ।) छन्दोबद्ध अंग्रेजी हिन्दी बल्लभकोष ।।) अंग्रेजी हिन्दी तारशिक्षक १) अंग्रेजी हिन्दी व्यापारिक कोष २) हनुमान चालीसा)।। रामचालीसा)। तार्किकशरीर ।) मूर्त्तिपूजा ।।।) श्राद्ध ।) कान्यकुब्ज प्रकाशिका ≡) यूनान की कहानियां =) शब्दार्थरूपमीमांसा =) धात्वर्थरूपमीमांसा =) अव्ययार्थ मीमांसा -) प्राभाविक व्याकरण शब्दावली ।)

पुस्तक मिलनेका पता—मैनेजर ब्रह्मप्रेस इ—